हिन्दी–उर्दू की सकीर्णता से दूर किन्तु अन्दाजे–बया के बाकपन के सर्वथा निकट मानवीय सम्वेदनाओं नर–नारी सम्बन्धों और आदर्श सामाजिकता के कुशल चितेरे प्रख्यात कवि और शायर श्री राम प्रकाश गोयल साहित्य के सर्जक साहित्यकारो मे अग्रण्य है। किसन कितना लिखा है इससे किसी रचनाकार का पूरा मूल्यॉकन नही होता बल्कि किसका लिखा हुआ पीढियो को सीढ़ियॉ चढते समय बल और अदम्य साहस जुटाता है ऐतिहासिक मूल्यॉकन के लिये वही यथेष्ठ होता है। यदि हिन्दी की जमीन पर उर्दू का काव्य–शिल्प देखना हो तो जिन्दा दिल नेक इन्सान श्री गोयल का कलाम देखना चाहिए जैसे स्वस्थ उदाहरण के रूप मे 'एक समन्दर प्यासा–सा'। श्री गोयल का रचना–ससार रूप वैविध्य, समय सापेक्ष काव्य–शिल्प, औचित्य–अनौचित्य के रूप मे यथार्थ परक युग बोध और सर्वत्र सुबोधता कलात्मकता के साथ विद्यमान है जो नवागन्तुको के लिये सर्वथा प्रकाश–स्तम्भ है, ऐसा प्रकाश–स्तम्भ जिससे मानवीयता, गुण ग्राहकता, जिजीविषा, प्रेम मैत्री, करुणा, सहानुभूति आदि की किरणे विकीर्णत हो रही है।

डॉ नागेन्द्र

प्रभादीप

12 इन्दिरा कालोनी

रामपुर (उ प्र)

हिन्दी–उर्दू
के बाँकपन
नर–नारी र
चितेरे प्रख्य
साहित्य के
कितना लि
मूल्याँकन न
को सीढ़ियाँ
है ऐतिहासि
यदि हिन्दी
हो तो जिन्द
देखना चाहि
समन्दर प्या
वैविध्य, सम
के रूप मे र
कलात्मकता
लिये सर्वथ
जिससे मान
मैत्री, करुण
रही है।

एक समन्दर प्यासा–सा

पी गया कितनी नदियाँ अब तक, एक समन्दर प्यासा–सा,
मीठा पानी पीकर इतना, क्यो है अब तक खारा–सा?

राम प्रकाश गोयल

विवेक प्रकाशन, बरेली

विवेक प्रकाशन
जी–12, रामपुर बाग,
बरेली–243 001
फ़ोन 0581–475074

मुद्रक
बाइट्स एण्ड बाइट्स,
बरेली फोन 547608

मूल्य 100/–

प्रथम सस्करण – 1999

एक समन्दर प्यासा–सा
राम प्रकाश गोयल

समर्पित है–

उन हालात, हादिसात, एहसासात, मजबूरियों, रुसवाइयों और बेवफ़ाइयों को जिन्होंने ये ग़ज़लें लिखवाईं

अन्दाज़ा लगा पाएगा क्या दर्द का मेरे,
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।

हिन्दी–
के बॉक
नर–ना
चितेरे प्र
साहित्य
कितना
मूल्यॉक
को सी
है, ऐति
यदि हि
हो तो
देखना
समन्द
वैविध्य
के रू
कला
लिये
जिस
मैत्री,
रही हैं

अनुक्रम

ग़ज़ल

नज़्म

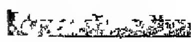
क़त्अ

शेर

गीत

अतुकाँत कविताएं

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं,
जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता ।



हिन्दी
के बं
नर–न
चितेरे
साहित
कितन
मूल्यों
को सं
है, ऐ
यदि
हो तो
देखन
समन
वैविध
के स
कला
लिये
जिस
मैत्री,
रही

दिल की बात

महान् वैज्ञानिक आइन्सटीन ने परमाणु बम के आविष्कार के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि पदार्थ (मैटर) मे असीमित ऊर्जा (एनर्जी) छिपी है। उनका समीकरण था– $e=mc^2$ । इसमे e का अर्थ है इनर्जी (ऊर्जा), m का अर्थ (पदार्थ का भार), और c का अर्थ है Velocity of Light (प्रकाश का वेग), जो 3,00,000 किलोमीटर प्रति सेकिण्ड होता है। 5 ग्राम भार वाले पदार्थ मे जो ऊर्जा छिपी हुई है वह है 5x3,00,000x3,00,000 । उनकी यह वैज्ञानिक उपलब्धि परमाणु बम का आधार बनी जो जापान के हिरोशिमा और नागासाकी के महा विनाश का कारण हुई।

जब इतनी अधिक ऊर्जा जड़ पदार्थ में छिपी है, तो चेतन मनुष्य मे कितनी ऊर्जा और शक्ति छिपी होगी? हर प्राणी असीम ऊर्जा का भण्डार और स्रोत हैं। इन्सान एक समन्दर है—चाहे जितना पानी उसमे से निकले, कोई कमी नहीं आती।

उपन्यास ''टूटते सत्य'', ग़ज़ल सग्रह ''दर्द की छॉव मे'' और ''रिसते घाव'' तथा ''सच्चे प्रेमपत्र'' के बाद मुझे लगने लगा था कि मै अन्दर से चुक गया हूँ, अब और बाहर आने को कुछ बाकी नही बचा। मगर दुनिया के थपेड़े जज्बात पर चोट करते रहे। मै अन्दर ही अन्दर टूटता और घुटता रहा। मुझे आज तक नही पता कि कौन, क्यो, कब, कैसे और क्या मुझसे लिखवाता रहा। मगर इतना सच है कि मैने लिखने के लिये कभी जबरदस्ती नहीं की। हालात, हादिसात, और एहसासात ने जब मजबूर कर दिया—तभी लिख सका।

यह दुनिया बड़ी अजीब है। जो दिखाई देता है, वह सच नही, जो सच है, वह दिखाई नही देता। इन्सान ने अपने चेहरे पर कई और फ़रेबी चेहरे लगा रखे है जिनमें उसका असली चेहरा गुम हो गया है। '' एक समन्दर प्यासा–सा'' मे उस असली चेहरे तक पहुँचने और उसे पहचानने की कुछ कोशिश की गयी है।

मनुष्य का जीवन बहुरंगी और बहु आयामी है' वह कभी एक जगह नही रुकता न ठहर पाता है पता नहीं किसकी तलाश है उसे क्या खलिश है क्या

बेचैनी है? सुख–दुख, धूप–छॉव, रात–दिन आते–जाते रहते है मगर कभी न बुझने वाली एक प्यास बराबर इन्सान को परेशान और बेचैन बनाए रखती है। यह प्यास ही उसकी ताक़त है, उसकी ऊर्जा है जो उसे कुछ कर गुज़रने को मजबूर करती है। मुझे नही मालूम कि यह प्यास किसने और कब जगाई मेरे अन्दर। मगर वह प्यास आज भी वैसी की वैसी बरक़रार है। "शम्अ हर रग मे जलती है सहर होते तक"––ग़ालिब की उस शम्अ के कुछ रंग मै भी कभी–कभी महसूस कर सका हूँ।

"एक समन्दर प्यासा–सा" को सजाने–सवारने में डॉ उर्मिलेश, रईस बरेलवी, डॉ नागेन्द्र और रमेश गौतम का विशेष योगदान रहा है। मै हृदय से उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इन्सान की तरह समन्दर भी बहुत प्यासा है। कितनी नदियॉ पी चुका है अब तक और हमेशा पीता रहेगा। इसान और समन्दर की यह प्यास ही एक ''समन्दर प्यासा–सा'' मे है। इसकी एक बूँद भी अगर आपकी प्यास जगा सकी या बुझा सकी तो मै अपने आपको बहुत खुश्किस्मत समझूंगा।

राम प्रकाश गोयल
जी–12, रामपुर बाग,
बरेली–243 001
फ़ोन 0581–475074

हार को जीत में बदल दूँगा,
मेरे अन्दर छुपा सिकन्दर है।

एक समन्दर प्यासा–सा

जीवन के तल्ख् और मीठे एहसासों से साक्षात् कराती ग़ज़लें।

ग़ज़ले हो या कविताएँ– कवि की लेखनी से लिखी गई तमाम रचनाएँ अलग–अलग स्वभाव और स्तर को जीने वाले रिश्तो की तरह होती है। कुछ रिश्ते थोड़ी दूर चलकर छूट जाते है, कुछ से हमारा ही मोह–भग हो जाता है और कुछ जीवन भर हमारा साथ निभाते है। जो रचना अपनी सवेदना और कहन दोनों मे ही निष्कलुष आत्मीयता से भरी होगी और अपनी सम्प्रेषणीयता से अपनीत होकर एक लम्बे समय तक हमारे मन और मस्तिष्क को सवेदित और प्रचेतित करेगी, वह उसी रिश्ते की तरह होगी, जो जीवन भर हमारा साथ निभाते है। कुछ रिश्ते पुराने होकर भी जीवन मे नया रस घोलते है और कुछ नए होकर भी हमे रुक्ष और उबाऊ बना देते है। यो सब पुराने सही हो और सब नए गलत ऐसा भी नहीं है। पुराना तब तक सही है जब तक कि वह रूढ़ि न बन जाये और नया भी तब तक सही है, जब तक वह अपनी पुरानी जड़ो (जड़ताओ नही) से पहचान रखे।

आज कविता ही नही, साहित्य की हर विधा मे नए–पुराने का सवाल जब–तब उभरता ही रहता है। कविता के क्षेत्र मे इन दिनो यह सवाल कुछ ज़्यादा ही तेजी पकड़ रहा है। नवगीत को छोड़कर लोग फिल्मी गीत की ओर लौट रहे है, कुछ लोग पारम्परिक गीत को ही असली गीत मानने पर अड़े हुए है। ग़ज़ल के क्षेत्र मे भी जदीद ग़ज़लो के साथ रिवायती ग़ज़लो का शोर अभी थमा नही है। कैसिटो मे आज भी ज़्यादातर रिवायती ग़ज़लें धड़ल्ले से भरी जा रही है। इन रिवायती गज़लो में सब बकवास हो, ऐसा भी नही है।

दर असल कोई भी सच्चा कवि परम्परा के नाम पर किसी रूढ़ि को स्वीकार नही करता और न ही आधुनिकता के नाम पर चालू, फैशन को अपने रचना–कर्म से जोड़ता है। श्री राम प्रकाश गोयल बेशक परम्परावादी लहजे के गज़ल–गो कवि हैं लेकिन आधुनिकता से बिल्कुल मुँह फेरे हो ऐसा भी नही है एक प्यासा सा सग्रह की गज़लों कतात शेर गीत अतुकाँत

कविताएं तथा क्षणिकाओ, सभी में श्री गोयल जैसे है वैसे ही प्रस्तुत हुए हैं। उनकी रचनाओ मे बुनावट है लेकिन बनावट नही है। सच तो यह है कि वे शोर के नही बल्कि शऊर के शायर और कवि है। 'एक समन्दर प्यासा–सा' की ग़ज़लो से गुज़रते हुए मुझे उर्दू की नई कविता के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर श्री शुजा खावर का यह शेर ध्यान आ रहा है–

तूफ़ान हो सीने में मगर लब पे खामोशी
हजरात यही होते हैं आसार ग़ज़ल के।

अपनी इन ग़ज़लो मे श्री राम प्रकाश गोयल एक दर्द आश्ना दिल रखने वाले शायर के रुप मे हमे नज़र आते है। क्यो न हो? कवि का व्यक्तित्व उसकी रचना से अलग होकर दर्द की अनुभूतियों के इर्द–गिर्द ही ज़्यादा रहे है। 1972 मे प्रकाशित उनका मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'टूटते सत्य' जहाँ त्रिकोण प्रेम को लेकर लिखा गया, वही उनका 1987 मे प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाव मे' भी प्रेम और दर्द की अनुभूतियो पर ही केन्द्रित रहा। इसी तरह 1992 मे प्रकाशित उनका दूसरा ग़ज़ल सग्रह 'रिसते घाव' भी मूलत प्रेम और बिरह के अनुभवो से ही सम्पन्न दिखा। और तो और इसी वर्ष उनके द्वारा सम्पादित 'सच्चे प्रेम पत्र' नामक पुस्तक जो डायमण्ड पॉकेट बुक्स दिल्ली ने प्रकाशित की, उसकी भूमिका श्री गोयल के प्रेम और वियोग के अनुभवो से ही ज़्यादा जुड़ी दिखी। उन्होने एक नाटक 'दिल और दिमाग' भी लिखा है जिसमें उन्होने मनुष्य के हृदय और मस्तिश्क मे चलने वाले द्वन्द्व का प्रतीकात्मक चित्रण किया है। यदि इन सभी कृतियो को मनोविकलन प्रणाली से समीक्षायित किया जाए तो यह निष्कर्ष सहज ही निकल सकता है कि श्री राम प्रकाश गोयल प्रेम और दर्द के भोगे हुए क्षणो के निश्छल रचनाकार है। अपनी इस निश्छलता की अभिव्यक्ति में कही–कही वे इतने सरल हो जाते है, जैसे सीधे–सीधे हमसे बतिया रहे हों। कुछ शेर दृष्टव्य है –

राते गुज़री जागते जिनके लिए
वो नही मिल पाए एक दिन के लिए

. . . . .

बेरुखी उसकी सह रहे हैं हम
फिर भी हमसे गिला नही होता

.. ..

हम उनकी याद को दिल से लगाए बैठे है
उधर वो प्यार से नज़रे चुराए बैठे है।

....

मैने चाहा कि उससे दूर रहूँ,
क्या करुँ दिल तो मानता ही नही

... .

पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला
हम इस तरह मिटे है कि मसूर हो गये

. . . .

तू तो तस्वीर कला की है मुजस्सम ऐसी
जबसे देखा है तुझे मुझको खुदा याद नही

. . . .

तुमको मैने लिखे थे जो भी खुतूत
उनको दिल से लगाके देखो तो
प्यार होता नही कभी नाकाम
इसपे ईमान लाके देखो तो

.. ..

मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ है
कहीं चुप है कही यह बाजबॉ है।

आज की जदीद गज़ले भले ही यथार्थपरक दृष्टि रखते हुए नये लहर मे देश–परिवेश के साथ मनुष्य के अन्त सघर्ष को सामने लाने में सफल हो लेकिन इन गज़लो मे प्यार और सवेदना की अनुपस्थिति बेहद चिन्ताप्रद है। मनुष्य कैसा है, केवल यही बताना कविता का धर्म नही होता बल्कि उसे कैसा होना चाहिए, इसे यदि कविता नही बतायेगी तो और कौन बतायेगा। जबसे कविता से 'प्रेम भाव' को छिछला मानकर आउट डेटिड करार दिया, तबसे ही हम इसके कुपरिणाम उग्रवाद. लूट. हिंसा. बम. साम्प्रदायिक दगे. रिश्तो की टूटन आदि के रुप में देख रहे हैं आज के उत्तर भी बडी

हिन्दी
के बॉ
नर–न
चितेरे
साहित
कित
मूल्यों
को र्स
है ऐं
यदि
हो तो
देखन
समन
वैविध
के स
कला
लिये
जिस
मैत्री
रही

शिद्दत से कविता मे प्रेम की वापसी को तरजीह देते दिखाई देने लगे है। गोयल साहब इस दृष्टि से कही गलत नही है। भले ही उनका अन्दाज इन ग़ज़लो मे पुराना दिखे लेकिन प्रेमानुभूतियो की सरल–सहज अभिव्यक्ति उन्हे कहीं से भी ग़लत साबित नही कर सकती।

दोस्ती, रिश्ते, आपसी प्रेम, भाईचारा, जो कभी इन्सानियत की बुनियाद हुआ करते थे आज की भौतिकताओ और स्वार्थपरताओ ने उन्हें खोखला कर छोड़ा है। मानवता की उपस्थिति के लिए इससे बड़ा अपशकुन क्या हो सकता है। श्री राम प्रकाश गोयल इस सन्दर्भ मे अपने अनुभवो को सर्वसवेध बनाकर प्रस्तुत करने मे पूर्ण पटु है। उनके कुछ अशआर इस कथन की पुष्टि के लिए काफी होगे –

दोस्तो की दुश्मनी ज़िन्दा रहे
उनसे मिलिए और हँसते जाइये

वो जो कहता है कि अब दोस्त ज़माने में नहीं
उसने तो मुझसे अभी तक नही मिलकर देखा।

जिसकी ऑखो मे हों आसू किसी मुफ़लिस के लिए
ऐसे इन्सान को भगवान समझते रहिये।

काम जो आते है औरो के लिए दुनिया मे
वो ही जीते है कभी मरते वो बेनाम नहीं।

जो मुहब्बत करे नफ़रत से सदा दूर रहे
ऐसे इन्सानो की एक बस्ती बसाई जाये।

सबके दिल मे खुदा का जल्वा है
हर बशर कितना ख़ूबसूरत है।

श्री राम प्रकाश गोयल की गज़लो मे फैली यह जज़्बाती कैफ़ियत उनके व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन गई लगती है मानवीय एकता और प्रेम के लिए वे

व्यग्र है, उतने ही साम्प्रदायिक और अलगाववादी ताक़तो की वजह से नफ़रतो से दुखी भी। उनके ये शेर इस सन्दर्भ में हमे भावना और सोच रो से जोड़ते हैं–

नही तू हिन्दू, नही तू मुस्लिम, नही तू सिख–ईसाई है
इस धरती का तू बेटा है तू ही हिन्दुस्तान है।

. . ..

हम न हिन्दू, न मुसलमॉ, न सिख, ईसाई
हम हैं इन्सा हमे इन्सान समझते रहिए।

श्री गोयल जातीय और साम्प्रदायिक उन्माद के लिए राजनीति को ही मानते हैं। आज की नीतिविहीन राजनीति ने मॉ–बेटे, पिता–पुत्र, बहिन–भाई, भाई–भाई के रिश्तों तक में जहां दरारें डाल दी है, वहॉ देश के अवाम को के लिए दगों और नफ़रतो की आग में झोंकने से वह क्यो पीछे हटे। आज यासी दौर किस हद तक स्वार्थो से जा मिला है, इसकी बखूबी खबर लेते गोयल कहीं आक्रोश तो कही दु ख का इज़हार करते चलते है–––

हुआ क्या है आज निज़ाम को, कही अम्न है न सुकून है
जो फज़ा मे आग लगा सके मुझे उस शरर की तलाश है
और भी–––
क्या अजब सियासी ये दौर है हुए लोग इसमे हैं बदगुमॉ
जहाँ दोस्त बनके सभी रहे मुझे उस नगर की तलाश है

.. . .

रहनुमा बनके हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।

श्री गोयल बुरे दौर को अच्छे दौर मे बदलता हुआ देखना चाहते है। ायिक और जातीय प्रश्नो का एक नायाब हल उनके पास है, जिससे आप ़्मत होगे–––

बैठकर दिल की गॉठें खोलें हम
दूर रहकर कहाँ गुजारा है

श्री गोयल अपने समय से पूरी तरह बाख़बर है। उनके कुछ शेर इस बात की गवाही देगे——

सुन रहे है नई सदी है करीब
दिल पे इसका बडा दबाव है

. . . .

जिस्म जलेगे कितने और
गर्म अभी भी है तन्दूर।

सामयिकता के दबावो ओर तनावो को झेलता हुआ व्यक्ति अन्दर से खुद कितना टूट चुका है, इसका परिदृश्य भी इस संग्रह की गज़लो से ओझल नही हुआ है। गै़रो को आईना सभी दिखाते है लेकिन खुद को आईना दिखाना बहुत मुश्किल होता है। श्री गोयल ने अपना आईना अपने आप देखा है। तभी तो वे कहते है——

क्यों इतना बेचैन खलिश क्यो दिल मे है
मैने कोई जुर्म कही कर डाला है।

. . . .

समन्दर–सा है दिल मे प्यार मेरे
समन्दर–सा मगर खारा नही है।

'एक समन्दर प्यासा–सा' की गज़लों का एक उज्ज्वलतम पक्ष यह भी है कि तमाम निराशाओं और नाकामयाबियो के बीच रहकर भी इन गज़लो का शायर आस्था और विश्वास के दामन को छोड़ता नही है। कुछ अशआर देखें——

औरो की बैसाखी पर तू चल तो सकता है लेकिन
पहले ये अन्दाजा कर ले खुद कितना बलवान है।

. . . .

थक गए पॉव दूर हैं मंजिल
फिर भी चलते ही हमको रहना है।

. . . .

सबसे मिलने का सिलसिला रखना
तन्हा जीने का हौसला रखना

इन ग़ज़लो का एक और प्रभावी पक्ष है दर्शन और अध्यात्म की अभिव्यक्ति। श्री गोयल का दार्शनिक सोच जीवन की गहरी सच्चाइयो से जुडा है। हम जो भोगते और सुनते आये है, उसकी सरलतम अभिव्यक्ति ही उनके दर्शनिक शेरो मे हुई है। यह दर्शन क़तई वायवी नही है, प्रत्युत् जीवन के यथार्थ से जोडे रखता है। मसलन कुछ शेर देखे---

पहले अपनी खुदी मिटाना है,
फिर ख़ुदा के क़रीब जाना है

. ... ..

चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिए वरदान है।

. ...

ये दुनिया ख़्वाब है इस ख़्वाब का भरोसा क्या,
नही जो अपना वो अपना दिखाई देता है।

. .

मौत और ज़िन्दगी मे फ़र्क नही,
जागने सोने के बहाने हैं।

उपरोक्त अशआर शकराचार्य के 'ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या' और गीता के सदेश से अनुप्राणित हैं। ज़िन्दगी और मौत के फ़लसफे़ को बहुत से कवि और शायर अब तक कह चुके हैं। जीवन को 'जागना' और मौत को 'सोना' पहले भी कई कवियो ने बताया है।

स्व0 सुमित्रा नन्दन पन्त ने जहॉ जन्म को 'लोचन का खोलना' बताया है, वही मृत्यु को 'लोचन मूँदती' हुई बताया है। इसी भाव को गीतकार पद्मश्री गोपाल दास नीरज ने भी कहा है---

न जन्म कुछ, न मृत्यु कुछ, बस इतनी सिर्फ़ बात है,
किसी की ऑख खुल गई किसी को नीद आ गई।

कभी-कभी हमारी भाव-प्रवणता इतनी प्रखर हो जाती हे कि हमारे अनुभव किसी और के अनुभव से कुछ इस तरह टकरा बैठते हैं कि हमें पता ही

नहीं चलता कि यह बात हमने कैसे कह दी। श्री गोयल की गज़लों के संग्रह में एक शेर ऐसा भी है जो बहुत पुराने शेर की याद ताज़ा कर देता है--- मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है, वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है। अब श्री गोयल का शेर देखे---

इन्साँ हँसता है कभी, और कभी रोता है,
वही होता है जो किस्मत मे लिखा होता है

बहरहाल यह प्रभाव-ग्रहण सदियो से कवियों और शायरो की रचनाओं मे देखने को मिलता रहा है। महाकवि बिहारी तो इसके खा़स उदाहरण माने जाते है।

श्री राम प्रकाश गोयल के पास अनुभवो का विपुल भण्डार है। उनके अनुभव जहाँ उम्र की कड़ी धूप मे तपे हैं वही समयगत सच्चाइयो से रू-ब-रू भी हुए है। तभी तो वे कही उपदेशक तो कही दोस्त के अन्दाज़ मे अपने अनुभव हमे बताते चलते है। कुछ शेर देखे---

आपको जो भी जितना प्यारा हो,
उससे उतना ही दूर रहिए आप।

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं
जिस तरफ़ रास्ता नही होता

इस तरह इन गज़लो मे तनावो-दबावो का तीखा अहसास जहाँ है, वहीं ये गज़ले प्रासगिकता से भी कट नहीं सकी है।

'एक समन्दर प्यासा-सा' की गज़लो का शैल्पिक सुगठन कहीं से भी चरमराने लायक नहीं है। मतला के सफल निर्वहन के साथ इन गज़लों में शेरियत भी सुरक्षित रह सकी है, यह बड़ी बात है। कुछ शेर कहने की दृष्टि से काफी सरल और सादा हो कर भी अपनी प्रभाव-शक्ति से खाली नहीं हुए हैं। इन गज़लो में पारम्परिक 'मक्ता' का शेर कहीं नहीं कहा गया है, अपने आस-पास से लिए गए प्रतीकों और सहज किन्तु बिम्बात्मक भाषा से इन गज़लों

का कलेवर काफी अच्छा बन पड़ा है। व्यंग्यात्मकता इन ग़ज़लों की अतिरिक्त विशेषता है। इस सिलसिले मे एक शेर देखें—

मुझको दुनिया में मिले है कई ऐसे भी खुदा,
जिनको तकलीफ खुदा से कि वो ऊपर क्यो है।

सारत 'एक समन्दर प्यासा–सा' की ग़ज़ले जहाँ पठ्य है, वही श्रव्य भी है। जिदगी के तीखे और मीठे अहसासो की सरलतम अभिव्यक्ति के लिए ये ग़ज़ले चर्चा मे रहनी चाहिए।

इस ग़ज़ल–सग्रह के साथ श्री राम प्रकाश गोयल ने कुछ गीत, कुछ क़तात, कुछ क्षणिकाए और कुछ अतुकान्त कविताएँ भी जोड़ दी है। गीतो मे जहाँ राष्ट्रीय सन्दर्भ है, वही प्रेम, विरह और दर्शन की अभिव्यक्ति भी हुई है। क़तात और क्षणिकाएँ श्री गोयल के अनुभवो के निचोड़ को बड़ी बारीकी से हमारे समक्ष रखती है। उनकी अनुकान्त कविताओ में कवि सुलभ चिन्तन के कई आयाम उद्घाटित हुए है। कुल मिलाकर 'एक समन्दर प्यासा–सा' अपनी समग्रता मे एक पठनीय कविता सग्रह है।

डॉ0 उर्मिलेश
रीडर एव शोध निदेशक
हिन्दी–विभाग
नेहरु मेमोरियल शिवनारायण दास
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ (उ0प्र)

30 जौलाई 1999

श्री राम प्रकाश गोयल का गीत एवं ग़ज़ल संग्रह
जीवन के मूल्यों के दर्पण में

श्री राम प्रकाश गोयल के इस काव्य संस्करण का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि उन का कलाम पुरानी एवं नई रिवायतो का संगम है। उनके कलाम मे जहां मीर, गालिब और चकबस्त का गमे जानाँ, गमे दौरॉ और ज़िंदगी का फ़लसफ़ा पुराने रिवायती अन्दाज़ में मिलता है वही फ़िराक़ और हाली की नई क़दरे भी देखने को मिलती हैं। वह सामाजिक मरहलो[1] एव जीवन के फलसफ़े से सम्बन्धित किसी भी मफ़हूम[2] को कवित्व करने मे शेरियत व तग़ज़्ज़ुल[3] का भरपूर ख़्याल रखते हैं। उन के यहा अल्फ़ाज़ मे सादगी और सरलता है लेकिन मफ़हूम में गहराई देखने को मिलती है।

जैसे उनका यह शेर मेरे इस विचार की मुकम्मल[4] हिमायत करता है।

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं
उनके ऑसू मिरी ऑखो से निकल सकते है।

उनके यहा मुबालगा[5] कम हकीक़त[6] ज़्यादा मिलती है। जैसा कि उनके निम्नलिखित अशआर से ज़ाहिर है—

मै जिसे जिन्दगी समझता हूँ
वह मिरी मौत का बहाना है।
दिल को दिल से मिलने मे कुछ वक़्त तो लगताहै
नई इमारत बनने मे कुछ वक़्त तो लगता है।
दूर जितना मै उन से जाता हूँ
उनको उतना क़रीब पाता हूँ

राम प्रकाश गोयल साहब जो महसूस करते है उसे बग़ैर किसी झिझक के बेबाकी से अपने कलाम में नज़्म कर देते है। उनके शब्दों में बनावट नही होती। जैसे—

---

1. समस्याओ 2. विषय 3. गज़ल कहने का अंदाज़ 4. पूरी तरह से तस्दीक करना
5 बढ़ा बात करना 6

जो नज़र नज़र से मिला सके मुझे उस नज़र की तलाश है
हुई जिस से कोई ख़ता नहीं मुझे उस बशर की तलाश है।
दोस्तों ने तो दोस्ती बेची
हमने उनके लिये ख़ुशी बेची।

उनके कलाम की यह भी एक खूबी है कि उनकी मुबालगा आराई[1] भी हक़ीक़त आराई[2] महसूस होने लगती है। इशारे किनाए[3] उन के कलाम का ख़ास हुस्न है। कही कही उनके शेर का अस्ल मतलब हकीकी न होकर मजाज़ी होता है और अजीब लुत्फ़ देता है। जैसे—

चार तिनको का आशिया मेरा,
है वही बर्क़ की निगाहो में।

अगर कही उनके शेर का मफ़हूम किसी दूसरे शायर के शेरी मफ़हूम से टकराता भी है तो राम प्रकाश गोयल जी का अन्दाज़े बयॉ उन्हे दूसरे से मुनफ़िरद[4] कर देता है।

उनके गीत और ब्लैक वर्सेज़ भी उनकी इन्फ़िरादियत[5] को दर्शाते है। यहा भी वह अपने कलाम की पुख़्तगी का सुबूत पेश करते है। सक्षेप मे मै यह कहने पर गर्व महसूस करता हूँ कि उनका गीत, ग़ज़ल एव ब्लैक वर्सेज़ का यह सस्करण 'एक समन्दर प्यासा–सा' हिन्दी और उर्दू काव्य के एक सगे मील की हैसियत रखता है।

वह भीड़ मे भी तो तन्हा दिखाई देता है,
वह जाने क्या है मगर क्या दिखाई देता है।

रईस बरेलवी
प्रधानाचार्य (अवकाश प्राप्त)
रईस मार्केट, ईसाइयो की पुलिया, बरेली
फोन 454236

21 जौलाई, 1999

---

1 बनावटी सजावट 2 सच्ची सजावट 3 इशारो मे मतलब 4 अलग
5 व्यक्तित्व

हिन्दी-
के बॉ
नर—न
चितेरे
साहित्
कितन
मूल्यॉ
को सी
है, ऐरि
यदि f
हो तो
देखन
समन्व
वैविध्
के रू
कलात
लिये
जिसर
मैत्री,
रही है

गया कितनी नदियाँ अब तक, एक समन्दर प्यासा–सा

पी गया कितनी नदियॉ अब तक एक समन्दर प्यासा–सा,
मीठा पानी पीकर इतना, क्यो है अब तक खारा–सा।

नदियॉ पिलाये, बादल ले ले, चाहे जितना भी पानी,
अपनी सीमा कभी न लॉघे, सागर बड़ा सयाना–सा।

पूनम की रातों में सागर, कैसी कुलॉचे भरता है,
चन्दा के चुम्बन को आतुर, हो जाता दीवाना–सा।

सागर तो सारा ही खारा, एक बूॅद भी मीठी नही,
बरसाता पर मीठा पानी, दाता है वह न्यारा–सा।

प्रीतम की बाहो मे समाने, पागल है नदियॉ सारी,
प्रेमी सागर बाहुपाश मे भरने को बौराया–सा।

सबसे पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है,
चाहता क्या है, क्यो ये समन्दर, रहता हरदम प्यासा–सा?

इन्साँ हँसता है कभी, और कभी रोता है

इन्साँ हँसता है कभी, और कभी रोता है,
वही होता है जो किस्मत मे लिखा होता है।

मै बदल डालूँगा हाथो की लकीरो को जरूर,
मेरा अपना भी मुकद्दर[1] है अभी सोता है।

वो जो कल तक था हमारा वो है अब ग़ैर के साथ,
येतो दुनिया है यहाँ रोज यही होता है।

काम आ जाए किसी के तो ये जाँ[2] हाज़िर है,
यूँ तो हर आदमी बोझ अपना यहाँ ढोता है।

मै झुकूँगा न कभी जुल्मो–सितम के आगे,
इम्तिहाँ मेरा तो हर पल ही यहाँ होता है।

दुश्मनी करके भला किसने सुकूँ[3] पाया कभी,
बीज बर्बादी के इन्सान तो खुद बोता है।

ये तो एहसास[4] है जो रखता है बाँधे हमको,
बेगरज[5] दोस्त भला कौन यहाँ होता है।

मक़सदे जीस्त[6] है क्या किसको पड़ी जो सोचे,
आदमी खाता है पीता है और सोता है।

---

1 भाग्य 2 जान 3 चैन 4 भावना 5 बिना मतलब का 6 जीवन का लक्ष्य

साथ उनका अगर नहीं होता

साथ उनका अगर नही होता,
मुझसे तय यह सफ़र नही होता।
प्यार है मुझसे वर्ना उनका कभी,
मेरे कॉधे पे सर नही होता।
बात दिल की न सबसे कहना तुम,
हर कोई मोतबर[1] नही होता।
मै तो ज़िन्दा ही मर गया होता,
पास गर उनका घर नही होता।
आप कितना भी बोलें सच फिर भी,
दुनिया पे कुछ असर नहीं होता।
रास्ता प्यार खुद बनाता है,
कोई भी राहबर[2] नही होता।
मोम जैसे है अब भी लोग यहॉ
संगदिल[3] हर बशर[4] नही होता।
प्यार उनका न मिलता मुझको तो,
मेरा ऐसा जिगर नही होता।
जिस्म जलता है चॉदनी मे मिरा।
तुम बिना अब गुज़र नही होता।

नीय 2 रास्ता दिखाने वाला 3 पत्थर के ह्रदय वाला 4 इन्स

फूल के दामन में यारों ख़ार ही बस ख़ार

फूल के दामन में यारो ख़ार[1] ही बस ख़ार है,
फूल बन जीना यहाँ दुश्वार[2] ही दुश्वार है।

मैने अपने दिल से की बातें तो उसने ये कहा,
पास तेरे है सभी कुछ, बस नही एक प्यार है।

जब बढ़े मेरे क़दम तेरे मकाँ की ओर तो,
लौट आया रास्ते से तू नही अब यार है।

सोचने पर सबकी निकली इक मुसीबत की वजह,
कोई भी करता किसी को अब न दिल से प्यार है।

दोस्ती करने चला तो दिल ने पूछा ये सवाल,
वो तो है दुश्मन तिरा, हो सकता कैसे यार है।

दोस्त समझे थे जिसे, उसने निकाली दुश्मनी,
दोस्त बनकर ही तो अब, पीछे से करता वार है।

कोई भी तेरा शरीके ग़म न दिल से है यहाँ,
तू जिसे अपना समझता गै़र का वो यार है।

चलते चलते जाने हम कैसे मकाँ[3] मे आ गये,
छत नही हरसू[4] यहाँ दीवार ही दीवार है।

---

1 काँटा 2 मुश्किल 3 मकान 4 चारों तरफ

प्यासा दरिया, बहता पानी

प्यासा दरिया बहता पानी
अपनी इतनी राम कहानी।
साथ नही कुछ ले जाओगे,
माया तो बस आनी जानी।
दिल न दुखाना कभी किसी का,
रुकनी इक दिन खूँ की रवानी
सारी दुनिया होगी तुम्हारी,
गर बोलोगे मीठी बानी।
प्यार करे हर इन्साँ से हम,
यह दौलत है हमे कमानी।
एक समय वह भी आया था,
मै था राजा, तुम थीं रानी।
दुख दोगे तो दुख पाओगे,
मात यही पर सबको खानी।
देश का नकशा बदलेंगे हम,
अपने दिल में है यह ठानी।
रात में मुझको नीद न आती,
मेरी बेटी हुई सयानी।
कितनी बड़ी सौग़ात मिली है,
दिल में मुहब्बत आँख मे पानी।
प्यार का भूखा है हर इन्साँ,
ऋषियों तक ने बात ये मानी।
हुस्न पे इतना मत इतराओ,
चार दिनों की है ये जवानी

जलते हुए दिल का मेरे मंज़र नहीं

जलते हुए दिल का मेरे मंज़र[1] नहीं देखा
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा।

किस्मत मे लिखा जिसकी हो वीरों[2] मे भटकना,
जंगल के मुसाफ़िर ने कभी घर नहीं देखा।

हर बात ही मुमकिन[3] है जो हो पक्का इरादा,
हमने कभी किस्मत का सिकन्दर नहीं देखा।

फिर कैसे ख़ुदा तुमको मिले सोच लो साहिब,
जब अपनी ख़ुदी[4] को ही मिटाकर नहीं देखा।

देता हो बुराई का भलाई से जो बदला,
इस दौर मे ऐसा कोई पैकर[5] नहीं देखा।

है आग ही बस आग भरी दिल मे है मेरे,
अच्छा हुआ तुमने मुझे छूकर नहीं देखा।

अंदाज़ा लगा पाएगा क्या दर्द का मेरे,
तर अश्को से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।

हो जिसकी निगाहो मे फ़क़त[6] मंज़िले मक़सूद[7],
उसने तो कभी मील का पत्थर का नहीं देखा।

रोने भी न दे जुल्म भी करता रहे हर दम
दुनिया मे कहीं तुमसा सितमगर[8] नहीं देखा।

घुटता ही रहा है जो ग़रीबी के सबब से,
उस बाप ने बेटी का स्वयंवर नहीं देखा।

क्यों तुमको शिकायत है न आने की मुझी से,
तुमने तो कभी दिल से बुलाकर नहीं देखा।

हर फूल महकता है अलग अपनी महक[9] से,
कोई भी ज़माने मे बराबर नहीं देखा।

य 2 सुनसान, जंगल 3 सम्भव 4 अहम् 5. शरीर 6 केवल
पहुँचना है 8 अत्याचारी 9 खुशबू

वो भीड़ में भी तो तन्हा दिखाई

वो भीड़ में भी तो तन्हा[1] दिखाई देता है,
वो जाने क्या है मगर क्या दिखाई देखा देता है।

ये दुनिया ख़्वाब है, इस ख़्वाब का भरोसा क्या,
नही जो अपना वो अपना दिखाई देता है ।

था जीने मरने का वादा तो साथ–साथ मगर,
वो दोस्त अब मुझे बदला दिखाई देता है।

हम उसके झूठ की ताईद[2] कर नही सकते,
कि जिसका झूठ से नाता दिखाई देता है।

मै उसके प्यार को रुसवा[3] न होने दूँगा कभी,
जो मेरा हो के पराया दिखाई देता है।

फ़रेब कितना नज़र में है आज लोगो के,
कि हर बुरा उन्हें अच्छा दिखाई देता है।

करोगे किसका यक़ीं आज तुम ज़माने में,
कि अब तो दोस्त भी बदला दिखाई देता है।

गुरूर [4] से जो यह कहता था हम तुम्हारे हैं,
वो वादा उसका तो झूठा दिखाई देता है।

पुष्टि तस्दीक 3 बदनाम 4 घमड गर्व

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सक

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते है,
उनके ऑसू मेरी ऑखो से निकल सकते है।

ऐसा अजाम[1] वफ़ा का कभी सोचा ही नही,
होके रुसवा[2] तेरे कूँचे [3] से निकल सकते है।

घर खुदा के गये तन्हा तो बहुत रोएंगे हम,
वह चले साथ तो हॅस हॅस के भी चल सकते है।

मै हूँ जिस राह पे तेरी है यकी हो जाए
लड़खड़ाते हुए ये पॉव सम्हल सकते है।

बात दुश्वार[4] नहीं कोई जहॉ मे यारो,
दिल की क्या बात है पत्थर भी पिघल सकते है।

एक या दो नही लाखो है मिसाले[5] ऐसी,
इश्क़ सच्चा हो तो दुनिया को बदल सकते है।

मौत ने जब भी सदा[6] दी तो मिला उसको जवाब,
देंगे वो हमको इजाजत तभी चल सकते है।

वक्त आ जाए तो पीछे नही रह सकते हम,
अपने हालात[7] को खूँ[8] दे के बदल सकते है।

दे सकेगे नहीं एहसानों का बदला उनके,
वो अगर चाहे तो तक़दीर बदल सकते है

---

1 परिणाम 2 बदनाम 3 गली 4 मुश्किल 5 उदाहरण 6
8 खून

देल में मेरे प्यार, लबों पर ताला है

दिल में मेरे प्यार, लबो पर ताला है,
मुझको सुख ने नही, दुखो ने पाला है।
कैसे हो पहचान दोस्त और दुश्मन की,
बाहर से है गोरा अन्दर काला है।
हर इक है मजबूर परीशॉ ग़म से है,
छुप–छुप के वो पीता ग़म का प्याला है।
बोल रहा है मुझसे मीठी बोली जो,
छुरा पीठ मे वही भोकने वाला है।
मुॅह से जपते राम, बग़ल मे ईटे है,
आस्तीन में सॉप, हाथ में माला है।
दिल मे कुछ और कुछ है ज़बॉ पर लोगो के
हर इन्सॉ के अन्दर मकड़ी जाला है।
क्यो इतना बेचैन ख़लिश[1] क्यो दिल मे है,
मैने कोई जुर्म कहीं कर डाला है।
छोड़ो ये सब बातें, आओ मिल बैठे,
नही यहॉ पर कोई बदलने वाला है।

सुकूने दिल किसे प्यारा नहीं है।

सुकूने[1] दिल किसे प्यारा नही है,
मगर इसमें मेरा चारा नहीं है।

लिये फिरता है पत्थर हाथ मे वो
जो उसने आज तक मारा नहीं है।

कहाँ तक आज़माओगे उसे तुम,
कभी जो प्यार मे हारा नहीं है।

समन्दर–सा है दिल मे प्यार मेरे,
समन्दर–सा मगर खारा नहीं है।

बहुत नफरत भरी है अब दिलो मे,
किसी को कोई भी प्यारा नही है।

जिधर चाहे ढुलक जाए उधर को
ये दिल मेरा कोई पारा नही है।

न हो साहिल[2] से जिसका कुछ तअल्लुक़,
वो मौजों[3] से कभी हारा नही है।

लगा लेता है जो चेहरे पे चेहरा,
किसी की आँख का तारा नही है।

मिरे जज़्बात[4] से क्यों खेलते हो,
मिरा दिल इतना आवारा नही है।

मुहब्बत जिसने समझी है इबादत[5],
मुहब्बत मे कभी हारा नही है

चैन 2 किनारा 3 लहरों 4 भावनाओं 5 पूजा

कुछ खोया है, कुछ पाया है

कुछ खोया है, कुछ पाया है,
मैंने कुछ न गँवाया है।
कर दी जब नीलाम खुशी तो,
आँसू मैंने पाया है।
कुछ न बिगाड़ा मैने उसका,
फिर क्यों मुझे सताया है।
प्यार समझ सकता वह कैसे,
प्यार नही जब पाया है।
सच कहने के बाद भी उसको,
मेरा यक़ीं न आया है।
जान मिरी कुर्बान उसी पर।
जिसने मुझे रुलाया है।
जो दिखता वह सच न होता,
यह दुनिया तो माया है।
जिस्म पे इतना क्यो है गुरुर,
ये मिट्टी की काया है।
बहुत बड़ी क़ीमत देकर ही,
मैने उसको पाया है।

दुश्मनों से भी प्यार करिए आप

दुश्मनो से भी प्यार करिए आप
और बेफ़िक्र हो के रहिए आप।
हाथ मे दोस्तो के पत्थर है,
तोल कर अपनी बात कहिए आप।
बोलना द्रौपदी को महगा पड़ा,
ताला अपनी ज़बॉ पे रखिए आप।
क्या पता कब ये किस पे आ जाए,
कुछ न दिल पर भरोसा करिए आप।
देवता खुद को कहने से पहिले,
आईना सामने तो रखिए आप।
प्यार पर है टिकी हुई दुनिया,
प्यार पूजा समझ के करिए आप।
झूठ हारेगा लाजिमी[1] इक दिन,
सच्चे इन्सान बन के रहिए आप।
आपको जो भी जितना प्यारा हो,
उससे उतना ही दूर रहिए आप।
वो जो मजबूरियॉ दिखाते है,
कुछ भरोसा न उनका करिए आप।
आप औरो से रोज़ मिलते है,
एक दिन खुद से भी तो मिलिए आप।

---

1. निश्चित

मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ है

मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ[1] है,
कही चुप है कही यह बाज़बाँ[2] है।
किसी के ग़म में रह जाती है घुटकर,
मगर अश्को से हो जाती अयाँ[3] है।
मिरे दिल से है क्यो इतना तकल्लुफ़,
मिरा दिल तो तुम्हारा ही मकाँ[4] है।
मिरी बरबादियो का जो है बाइस[5],
उसी का अक्स[6] इस दिल मे निहाँ[7] है
बहुत चाहा वो मेरी बात समझे,
मगर एहसास ही उनमें कहाँ है।
जिधर देखे वो हलचल सी मचा दे,
उन्हे इस बात का कितना गुमाँ[8] है।
बहुत आसान है करना मुहब्बत,
मगर दुश्वार[9] उसका इम्तिहाँ है।
सजाया है मिरे ख़्वाबो को जिसने,
ख़बर इसकी मगर उसको कहाँ है।
मिटा पाओगे कैसे दिल से मुझको,
मुहब्बत का मिरी गहरा निशाँ[10] है।

---

1. कहानी 2 बोलती हुई 3 प्रगट 4 घर 5 जिम्मेदार 6 प्रतिबिम्
हुआ 8. घमड 9. मुश्किल 10 निशान

रस्मे दुनिया हमें निभाना है

रस्मे दुनिया हमे निभाना है,
उनकी खातिर ही मुस्कुराना है।

दूर है फिर भी पास वो कितने,
रिश्ता उनसे बहुत पुराना है।

दिल में नफ़रत, वफ़ा ज़बाँ पर है,
कितना बेदर्द ये ज़माना है

आपके दुख से मुझको मिलता सुख,
आज के दौर का फ़साना है।

दूर मंजिल सफ़र बहुत मुश्किल,
फिर भी चलते ही चलते जाना है।

कौन जाने कि कब रुकें साँसें,
मौत का अपना ही बहाना है

चैन की नीद गर है सोना हमे,
दिल किसी का नही दुखाना है।

इससे बढ़कर भलाई कुछ भी नहीं,
जो मिले उसको ही हँसाना है।

दुश्मनी जितनी चाहे वो माने,
मुझको फिर भी उसे मनाना है।

दीन–दुखिओं के काम आऊँ मैं,
अपनी यूँ जिंदगी बिताना है।

जिंदा रखने को सच जमाने में,
अपनी हस्ती मुझे मिटाना है।

हम हवाओं को मोड़ देते हैं

हम हवाओं को मोड़ देते हैं,
सारी दुनियां से होड़ लेते है।
कैसे चाहेगी उनको दुनिया जो
बीच मझधार छोड़ देते हैं।
हार को जीत मे बदलते वो,
हर मुसीबत जो ओढ़ लेते हैं।
कौन कहता है थक गये है हम,
अर्श[1] से तारे तोड़ लेते है।
भूल सकती नहीं उन्हें दुनिया,
टूटे दिल को जो जोड़ देते हैं।
कोई उनका यक़ी नही करता,
अपना वादा जो तोड़ देते हैं।
ग़म का कोई असर न होता जब,
तेरी यादों को ओढ़ लेते हैं।
क्यों परेशान इतना होते हो,
वक़्त तो खुद ही मोड़ लेते हैं।

ान

चिराग़ प्यार के दिल मे जलाए बैटे

चिराग़ प्यार के दिल मे जलाए बैठे है,
हम अपने प्यार की दुनिया सजाए बैठे है।

वो जिसने कोई भी वादा नही निभाया है,
हम उसकी राह मे पलके बिछाए बैठे है।

पता न था कि मुहब्बत का ये मिलेगा सिला[1],
हम आज अपनों को दुश्मन बनाए बैठे है

बहाए शौक से वो अपने प्यार की नदियॉ,
हम अपने दिल मे समन्दर छुपाए बैठे है।

मैं उनको देख रहा हूॅ उन्हे है ये मालूम,
इसीलिये तो वो नज़रे झुकाए बैठे है।

कभी तो उट्ठेगी हम पे भी प्यार की नज़रे,
हम एक उम्र से ये लौ लगाए बैठे है।

भड़क न जाये कही फिर से प्यार के शोले,
हम अपनी ऑख मे ऑसू छुपाए बैठे है।

---

1 इनाम

हर किसी शख़्स को इसान समझते रहिए

हर किसी शख़्स को इसान समझते रहिए,
और इस बात को ईमान समझते रहिए।

बातें आकाश की करता है बड़े रोब से जो,
ऐसे इसान को अजान समझते रहिए।

दूसरो की ही बुराई में जो रस लेते है,
है वे नादाँ[1] उन्हें नादान समझते रहिए।

पा सकेगा वही देने की हो जिसमें हिम्मत,
इसको ससार का विज्ञान समझते रहिए।

हम न हिन्दू, न मुसलमाॅ, न सिख, ईसाई,
हम है इन्साॅ, हमे इन्सान समझते रहिए।

जिसकी आँखो में हो ऑसू किसी मुफ़लिस[2] के लिये,
ऐसे इन्सान को भगवान समझते रहिए

1 नादान, अज्ञानी 2 गरीब

किसी के दिल में रहम नहीं

किसी के दिल में रहम नहीं,
थोड़ी सी भी शरम नहीं।
ऊपर वाला साथ रहे,
और किसी का करम नहीं।
सज़ा से बच न पाओगे,
ग़लत उठाना क़दम नहीं।
मै तो वक़्त का मारा हूँ ,
मुझपे ढाना सितम नहीं।
कहने वाले कहा करें,
दिल में रखना वहम नहीं।
खुद को तुम कहते हो ख़ुदा,
तुम्हें ज़रा भी शरम नहीं।
बाप को बेटे ने मारा,
खबर ये कोई गरम नहीं।
ज़ुल्म ढा रहा हर कोई,
दिल है किसी का नरम नहीं।
इन्साँ मतलब में अन्धा,
किसी का कोई धरम नहीं।

निश्चय यदि तू कर ले बंदे, हर मुश्किल आसान है,
डरता है तू क्यो दुनिया से, नाम तेरा इन्सान है।

यूँ तो मिलता है तू सबसे, कभी तो मिल ले अपने से,
जो चाहेगा वो कर लेगा, तुझमें ही भगवान है।

तन्हा आया है तू जग में, तन्हा ही बस जाएगा,
दो दिन के सब नाते रिश्ते, यह जग की पहचान है।

ककर पत्थर जोड़ के तू ने, महल बनाया सपनो का,
साथ नही जाएगा कुछ भी, तू इससे अंजान है।

नहीं तू हिन्दू, नही तू मुस्लिम, नहीं तू सिख ईसाई है,
इस धरती का तू बेटा है, तू ही हिन्दुस्तान है।

यह भारत है देश हमारा, हमको प्राणों से प्यारा,
देश की खातिर अपना तन मन धन सब कुछ बलिदान है।

गर्दन नीची शर्म से सबकी, लगी द्रौपदी दॉव पर,
हारा जुआरी भूल गया था, यह नारी अपमान है।

औरों की बैसाखी पर तू चल तो सकता है लेकिन,
पहले यह अंदाजा कर ले, खुद कितना बलवान है।

पारस पत्थर छिपा है तुझमें, इसका तुझको ज्ञान नहीं,
लोहे को भी सोना कर दे, तू इतना गुणवान है।

नही वो तेरा नहीं ये मेरा, जो कुछ है वह सबका है,
तेरा मेरा छोड़ के जीना, सचमुच तेरी शान है।

चलते चलते पहुँचेगा तू, खुद ही अपनी मंजिल पर,
नही असम्भव कुछ भी जग में, दिल में जब अरमान है।

नहीं डिगा पाएगा कोई, तेरे दृढ़ संकल्पों को,
कभी न रुकना कभी न झुकना यह तेरा ईमान है

जिंदगी मौत की अमानत है

जिंदगी मौत की अमानत[1] है,
मौत इस जिंदगी की आदत है।
हादिसो[2] पर किसी का क़ाबू नही,
हर क़दम पर यहाँ मुसीबत है।
देखने मे लगे हैं वो नाचीज़[3],
उसका किर्दार[4] उसकी दौलत है।
फ़िक्र मै क्यों करूँ ज़माने की,
साथ जब मेरे मेरी क़िस्मत है।
दूध उसको पिलाओ कितना भी,
डसना ही साँप की तो फितरत[5] है।
होगा उसका बुरा जो करता बुरा,
ये पुरानी बहुत कहावत है।
कौन जाने कहाँ पे है जन्नत[6],
ये ज़मीं[7] खुद ही एक जन्नत है।

1 धरोहर, 2. दुर्घटनाओ, 3. कुछ भी नही, बहुत छोटा, 4 आचरण, व्यवहार, 5 आदत, 6. स्वर्ग, 7. जमीन, पृथ्वी

है खुदा मिलता नहीं परछाई में

है खुदा मिलता नही परछाई मे,
ढूँढ लो उसको कहीं गहराई मे।
उससे रिश्ता जन्म–जन्मो का मिरा,
वो मिला है मौत की अगड़ाई मे।
मुझको नफरत है बहुत ही झूठ से,
जिदगी गुजरे मेरी सच्चाई में।
है नहीं मुमकिन[1] उसे अब छोड़ना,
मैंने पाया है उसे रुसवाई[2] में।
ढूँढता फिरता था खुद को दर बदर,
मुझको मेरा ''मैं '' मिला तन्हाई मे।
दोस्तो चेहरा लगाना छोड़ दो,
गिर पड़ोगे एक दिन तुम खाई में।
हर कदम पर ठोकरे खाने के बाद,
दिल को मिलता है सुकूँ[3] तन्हाई मे।

सम्भव 2 बदनामी 3 चैन सुकून

मुझको खुद से बड़ा लगाव है

मुझको खुद से बड़ा लगाव है,
इसलिये जहन[1] में तनाव है।
सुख ही सुख चाहता है जीवन में
आदमी का अजब स्वभाव है
दोस्ती कैद अब किताबों में,
आज के दौर[2] का प्रभाव है।
दोस्त बनकर जो कर रहा है वार
उससे फिर किस तरह बचाव है
खैर अपनी नजर नहीं आती,
दोस्तो का बड़ा जमाव है।
सुन रहे हैं नयी सदी है करीब,
दिल पे इसका बड़ा दबाव है।
कोई शिकवा[3] नहीं उन्हें मुझसे,
बेरुखी[4] है कि ये लगाव है।
शहर में ठंड से बचाव नहीं,
गाँव में कम से कम अलाव है।
गम की अपने हवा न लगने दो,
बाखुदा कैसा रख–रखाव है।
जिदगी आ हिसाब कर ले साफ ,
ये मेरा आखिरी पड़ाव है

माग 2 समय 3 शिकायत 4 उपेक्षा विमुखता

पास मेरे आइए, आ जाइए

पास मेरे आइए, आ जाइए,
मुझको इतना तो न अब तड़पाइए।
प्यार ही सब कुछ जहाँ मे दोस्तो,
जाइए नज़दीक सबके जाइए।
दोस्तों की दुश्मनी जिन्दा रहे,
उनसे मिलिए और हँसते जाइए।
आप कितने हैं खफा मुझको पता,
दूर इतना तो मगर मत जाइए।
कौन समझा इस जहाँ को आज तक?
आप ही समझे हो तो समझाइए।
अक्ल की बाते कभी तो छोड़कर
दिल की सुनिए मैकदे[1] मे जाइए।
आप कब थे दोस्त मेरे ए जनाब,
दुश्मनो से आप भी मिल जाइए।
झूठ ही जब सच कभी लगने लगे,
आईने के सामने आ जाइए।
सीखना हों अक्ल की बाते अगर,
आप दरवेशों[2] से मिलने जाइए।
पॉव जब चादर से हो जाएं बड़े,
दूसरी चादर नयी ले आइए।
प्यार की बाते करो खुलकर मिलो,
जीने दीजे और जीते जाइए।
लग रही हो बात गर झूठी मिरी,
पूछ कर सन्यासियों से आइए।
सच को सुनने की नहीं हिम्मत यहाँ,
आप फिर भी सच को कहते जाइए।

1 - शराब घर 2 फकीरों

है जो अपना वही क्यों आज सताता है मु

है जो अपना वही क्यों आज सताता है मुझे,
ग़ैर तो ग़ैर है फिर भी क्यो निभाता है मुझे।

थी खता उसकी मगर फिर भी मनाने मैं गया,
उसको समझाओ कि क्यों ऑखे दिखाता है मुझे।

वो जो कहता था कि ताउम्र[1] रहेगा मेरा,
वक्त आया है तो क्यों इतना रुलाता है मुझे ।

जिंदगी थक गयी दुनिया से है लड़ते–लड़ते,
आखिरी वक्त है अब क्यो वो जलाता है मुझे।

मुझको मालूम है वो प्यार नही करता मुझे,
मैं नहीं जानता क्यो याद वो आता है मुझे।

बात उसने ही बढ़ाई थी है यह उसको पता,
''मेरी गलती थी'' वह क्यो ऐसा जताता है मुझे।

हमसफ़र[2] बनके सताता ही रहा है एक दोस्त,
ख़ुद ही रोएगा वो क्यों इतना सताता है मुझे।

मैने दुनिया के हर एक रग का मंज़र देख

मैने दुनिया के हर एक रग का मंज़र[1] देखा,
दोस्त दुश्मन से सभी लोगो से मिलकर देखा।

आईना कहता है तुम तो बड़े झूठे हो दोस्त,
हाथ अपना कभी दिल पर नहीं रखकर देखा।

रात मे नीद भला कैसे तुम्हे आएगी,
प्यार का जाम पिया ना ही पिलाकर देखा।

प्यार चुम्बक है खिचा आता है खुद ही इन्सॉ,
प्यार से इन्सॉ के दिल को नही छूकर देखा।

बात बढ़ती है बढ़ा लो उसे जितना चाहो,
ग़ल्तियॉ औरो की दिल से ना भुलाकर देखा।

पीटता फिरता था सच का जो ढिंढोरा अपने,
सामने आईना उसने नही रखकर देखा।

वो जो कहता है कि अब दोस्त ज़माने मे नही,
उसने तो मुझसे अभी तक नही मिलकर देखा।

---

1 दृश्य

पल में रोना है पल में हँसना है

पल में रोना है, पल मे हॅसना है,
जि़ंदगी हर लम्हा[1] बदलना है।
थक गये पॉव दूर है मंजि़ल,
फिर भी चलते ही हमको रहना है।
जो भी चाहो ज़रूर पाओगे,
तुम को बस कर्म करते रहना है।
झूठ का बोल बाला हर जानिब[2]
फिर भी हिम्मत से सच को कहना है।
सुख जो चाहो तो सबको दो सुख तुम,
दोगे जो भी वही तो मिलना है।
तुम सही हो, गलत नही मै भी,
देखना सब का अपना अपना है।
सच न घटता है और न बढ़ता है,
झूठ को घटते बढ़ते रहना है।
जो भी पाना हो उसकी दो कीमत,
मुफ्त कुछ भी यहॉ न मिलना है।
जिसकी खा़तिर ही बिक गये थे हम,
उसका दुश्मन से मिलना जुलना है।

1 पल क्षण 2 तरफ

दोस्त इस दौर में दुश्मन से भी बद्तर क्यों है

दोस्त इस दौर मे दुश्मन से भी बद्तर[1] क्यो है,
था जो कल मेरा वह गैर के घर पर क्यो है।

आदमी जाने है क्या होता है सबका अन्जाम [2],
है तआज्जुब कि वो फिर बनता सिकदर क्यो है।

आज तक मैने किसी का भी बुरा चाहा नहीं,
हर क़दम पर मेरी किस्मत मे ये ठोकर क्यो है।

दूर हो जाएगा तुम जिसको बहुत चाहोगे,
कोई समझा नही दुनिया मे ये अकसर क्यो है।

मुझको दुनिया मे मिले हैं कई ऐसे भी खुदा,
जिनको तकलीफ खुदा से कि वो ऊपर क्यों है।

भीख भी तुझको मयस्सर नही अब तो लेकिन,
शाह था तू तेरा अब रूठा मुकद्दर[3] क्यो है।

मै परेशान हूँ आता न समझ मे मेरी,
ज़ख्म हर पीठ पे हर हाथ मे पत्थर क्यो है।

चाहते सब हैं रहे अम्न[4] हमेशा ही यहाँ,
ऐसी बर्बादी का फिर दुनिया में मजर [5]क्यों है।

तुम तो कहते थे, बिछुड़ कर न कमी रोएगे,
आज अश्को [6] का यह ऑखो में समन्दर क्यों है।

उम्र बढ़ती है मगर ज़िदगी घटती जाए,
बेखबर[7] मौत से इसान बराबर क्यों है।

बुरा 2 परिणाम 3 भाग्य 4 शान्ति 5 दृश्य 6 आँसुओं 7

जीवन भर कोशिश करने पर, आज हूँ शरमाया –सा

जीवन भर कोशिश करने पर, आज हूँ मैं शरमाया–सा
कितनी बार किया मन बस मे, किन्तु है वह पारा–सा

इस दुनिया का गोरख–धधा, कोई समझ नही पाया
सत–फ़क़ीरो की वाणी है, दुनिया एक तमाशा–सा

प्यार दिलो मे है न किसी के, दूरी बढ़ती जाती है
इसीलिये तो हर इन्सा ही, लगता हारा हारा–सा

चाहा कितनी बार है मैने, कभी तो खुलकर हँस लेता
हर पग पर मिलता ही रहा है, एक ऋषि दुर्वासा–सा

सारी दुनिया एक करेंगे, देश सभी यह कहते है
सच्ची बात तो यह है यारो, है यह केवल नारा–सा

संकेतो की भाषा अब तो, कोई समझ नही पाता
चाहता है हर कोई जग में, कुछ हो जाये खुलासा–सा

हार पाण्डवो के हिस्से मे, जीत कौरवों के हिस्से
दुर्योधन के राज–भवन में पड़ता उल्टा पाँसा–सा

मन्दिर–मस्जिद ढूँढा उसको, फिर भी मिला नही मुझको
झॉका जब अपने अन्दर तो, मै था उसका साया–सा

झूठे उनके जो सब बहाने हैं

झूठे उनके जो सब बहाने है,
हमको दुनिया से वो छुपाने है।
रख लिया दिल पे हमने इक पत्थर,
भूल जाने के अब ज़माने हैं।
हम तो अपनी निभा चुके यारो,
अब तो वादे उन्हे निभाने है।
दूर क़सदन[1] हुआ हूँ उनसे मै,
अपने जज़्बात आज़माने हैं।
आज आए हैं वो ज़हे क़िस्मत,
फूल उनपर हमे लुटाने हैं।
उनकी भीगी हुई है पलके आज,
अश्क उनके हमे सुखाने है।
हर जनम मे रहे वो मेरे साथ,
रिश्ते उनसे बहुत पुराने है।

---

1 जानबूझकर .

इन्साँ इन्साँ से हो दूर

इन्साँ इन्साँ से हो दूर,
है ये खुदा को नामजूर।
दिल में मुहब्बत लब पर चुप,
तुम और मै दोनों मजबूर।
दौलत का अपना ही नशा है,
बिना पिए होता है सुरूर[1]।
अपना ले जो गैर के ग़म,
उसका चेहरा है पुर[2] नूर[3]।
वादा कर पूरा ना करना,
दुनिया का है ये दस्तूर[4]।
जिस्म जलेगे कितने और,
गर्म अभी भी है तन्दूर।
दिल मेरा जब है तेरा,
मिलने से फिर क्यों माजूर[5]।
मै दुनिया में सबसे अच्छा,
हर इन्साँ को है ये गुरूर[6]।
कहने को वो साथ है मेरे,
पर दिल से है कितना दूर।
चैन से जीना मुश्किल होगा,
मत हो जाना तुम मशहूर।

नशा 2 भरा हुआ 3 प्रकाश ज्योति 4 रिवाज 5 मजबूर 6 घम

.कर तुमको मुझे तन्हा सफर करना प.

छोड़कर तुमको मुझे तन्हा सफ़र [illegible]
क्या बताऊँ तुमको ख़ुद से कि [illegible]

मै तो समझा था कि मेरी ज़िंदगी के [illegible]
याद जब आई तो दिल को [illegible]

अब न लो ऐ दोस्त मेरे इश्क़ का तुम इम्तिहाँ
वर्ना तुम तो जानते हो कैस[2] को मरना पड़ा

रफ़्ता रफ़्ता हो गयी मद्धम मिरे दिल की सदा[3]
ज़िंदगी के साज़ को हर हाल मे बजाना पड़ा।

दूध की लाया नहर फ़र्हाद पत्थर काट कर
पर न शीरीं मिल सकी, खुद उसको ही मरना पड़ा।

ज़ब्त[4] को आखिर कहाँ तक हम निभाते इश्क़ मे
जो हमारा था उसी से ही जुदा[5] रहना पड़ा।

तुम से मिलकर यूँ लगा, आई है गुलशन[6] में बहार[7],
थी खिज़ाँ[8] क़िस्मत में मेरी रंजो–ग़म सहना पड़ा।



मजनूँ 3 आवाज 4 धैर्य 5 अलग 6 बाग 7 बसंत 8

कोई ये बात भी लिख दे मिरे फसाने में

कोई ये बात भी लिख दे मिरे फसाने[1] मे,
कि उनको मुझसे मुहब्बत थी एक ज़माने मे।

ज़बॉ पे आते ही मशहूर हो ज़माने मे,
अजीब बात है इस प्यार के फ़साने मे।

ये और बात कि सो न सका हूँ अरसे से,
लगेगा तुमको मगर एक पल सुलाने में।

किया है दूर उसे मुझसे मेरी चाहत ने,
मगर यक़ीन किसे आएगा ज़माने मे।

मैं जीतता भी तो शायद न इतना खुश होता,
मिली है जितनी खुशी तुमसे हार जाने मे।

फ़रेब[2] खा ही गये दोस्त जो उन्हे समझा,
थी दुश्मनी ही निहॉ[3] उनके दोस्ताने मे।

कोई है ग़र्क[4] नज़र मे तो कोई साग़र[5] मे,
किसी को होश नही है शराबख़ाने में।

मै इम्तहान मे क़ायम रहा वफ़ा के साथ,
वो टूट टूट गये मुझको आज़माने मे।

तुम्हारा जुल्म[6] सलामत बस अब खुदा हाफिज[7],
सुकून[8] ढूँढ ही लूँगा कही जमाने में।

---

1. कहानी 2 धोखा 3. छिपी हुई 4 डूबा हुआ 5. शराब का प्याला 6. अत्याचार 7 ईश्वर आपकी रक्षा करे 8 चैन

मुख़्तसर जीस्त का फसाना है

मुख़्तस्र[1] जीस्त[2] का फ़साना[3] है,
जो भी आया है उसको जाना है।

पहिले अपनी ख़ुदी[4] मिटाना है,
फिर ख़ुदा के क़रीब जाना है।

मै जिसे ज़िदगी समझता हूँ,
वह मिरी मौत का बहाना है।

लोग अपनो से बैर रखते है,
मेरा गैरो से दोस्ताना है।

बेवफ़ाई तो उसने की है मगर,
बात दुनिया से यह छुपाना है।

सबके दुख–दर्द मे शरीक रहूँ,
मुझको दौलत यही कमाना है।

ख़ून पानी मे कोई फ़र्क नही,
कैसा बदला हुआ ज़माना है।

रूह तक क़ैद है मिरी इसमे,
यूँ तो कहने को आशियाना[5] है।

ज़िदगी से कहो ठहर जाए,
मौत को आईना[6] दिखाना है।

---

1 छोटा–सा 2 जीवन, ज़िदगी, 3 कहानी 4. घमड, अहकार 5. घर, 6 दर्पण शीशा

हम कितने पास थे मगर अब दूर हो

हम कितने पास थे मगर अब दूर हो गये,
यह कौन जान पाएगा मजबूर हो गये

कोशिश तो हमने लाख छुपाने की की मगर,
वो इस तरह मिले है कि मश्हूर हो गये।

ये उम्र का तकाज़ा है या हुस्न का कमाल,
मिलते है इस अदा से कि मग़रूर[1] हो गये।

दिल दे रहा हूँ आपको रखिए सम्हाल कर,
लौटा के यह न कहिएगा मजबूर हो गये।

ताउम्र[2] साथ रहने की खाई थी जो क़सम,
उसको भुला के किस तरह हम दूर हो गये।

जब पास थे तो सामने रहते थे रात दिन,
अब दूर जा के ऑख के वो नूर[3] हो गये।

पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला[4],
हम इस तरह मिटे है कि मसूर[5] हो गये

---

1 घमंडी 2 उम्रभर 3 ज्योति 4 इनाम 5 एक मुस्लिम महात
हक (मैं ब्रह्म हूँ) कहा और इस में उसकी गर्दन काटी गर

शम्मा के पास जाके देखो तो

शम्मा के पास जाके देखो तो,
अपनी हस्ती मिटा के देखो तो।
साज़े दिल को मिला के देखो तो,
मेरे नज़दीक आके देखो तो।
राज[1] अपना बता के देखो तो,
मुझ पे ईमान लाके देखो तो।
तुमको मैने लिखे थे जो भी खुतूत[2],
उनको दिल से लगा के देखो तो।
मेरी गज़लो में तुम ही रक़्साँ हो[3]
तुम इन्हे गुनगुना के देखो तो।
आग बस आग है मिरे दिल मे,
इससे दामन बचा के देखो तो।
हाथ मे जो तिरे लकीरें हैं,
उनको मुझसे मिला के देखो तो।
इश्क़ पर कौन रख सका क़ाबू,
इससे दामन बचा के देखो तो।
प्यार होता नही कभी नाकाम[4],
इस पे ईमान[5] ला के देखो तो।
तेरे खत आज भी है मेरे पास,
उनकी स्याही मिटा के देखो तो।
दिल को अपने तो एक बार कभी,
दिल से मेरे लगा के देखो तो।

---

1 भेद रहस्य 2 खत का बहुवचन बहुत से खत 3 नाच रही हो 4 असफल
5 विश्वास

जान लेवा शबे जुदाई है

जान लेवा शबे जुदाई[1] है,
कितनी मुश्किल से नीद आई है।
क्या उमीदे वफ़ा[2] करे उनसे,
जिनकी फ़ितरत[3] मे बेवफ़ाई[4] है।
हो गये दूर मुझसे सब अहबाब[5],
जब तबाही[6] करीब आई है।
कल तक अपनी थी जो नज़र ए–दिल,
आज वो ही नज़र पराई है।
प्यार मेरी कभी थी मजबूरी,
अब ये मजबूरी पारसाई[7] है।
याद आई तो दे गयी है ग़ज़ल,
जब गयी दे गयी है रुबाई है।
उनके चेहरे पे पड़ गयी जो नज़र,
चाँदनी मे नहा के आई है।
उनसे मिलने का आज है वादा,
लग रहा कैद से रिहाई है।
मौत क़िस्सा तमाम[8] कर देगी,
ज़िंदगी किसको रास[9] आई है।
वह नही बिछुड़े मुझसे ए हमदम[10],
रूह की जिस्म से जुदाई है।
मेरी क़िस्मत में दिन नही शायद,
रात के बाद रात आई है।

---

1 वियोग की रात, 2 वफ़ादारी की उम्मीद, 3. स्वभाव, 4. कृतघ्नत
5. मित्रगण (हबीब का बहुवचन), 6 बर्बादी, 7 सयम, इद्रिय निग्र
9 अनुकूल, 10 हर समय का साथी, मित्र।

वक़्त से क़ब्ल मर गया कोई

वक़्त से क़ब्ल[1] मर गया कोई,
फूल बनकर बिखर गया कोई।

नाम दुनिया मे कर गया कोई,
और बेनाम[2] मर गया कोई।

बेवफ़ाई थी याकि मजबूरी,
वादा करके मुकर गया कोई।

साथ देने की खाईं थी क़समे,
अपनी कसमें बिसर गया कोई।

सिर्फ़ देखे की बस मुहब्बत है,
वक़्त आया तो डर गया कोई।

अश्क[3] पलको से जब ढले मेरे,
मिसले शबनम[4] बिखर गया कोई।

कोई इसका सबब[5] बताए तो,
क्यूँ इधर से उधर गया कोई।

जिसकी दुनिया मे सिर्फ़ खुशियाँ थी,
रंजो–गम में बिखर गया कोई।

कैसा मुसिफ़ निज़ामे–कुदरत[6] है,
मार कर मुझको मर गया कोई।

---

1. पहिले, 2 बिना नाम के, 3. ऑसू, 4. ओस की तरह, 5 कारण, 6 प्रकृति का नियम कितना न्याय–प्रिय है।

किस जतन से वो पा गया मुझक

किस जतन[1] से वो पा गया मुझको,
यानी मुझसे छुड़ा गया मुझको।
उसका अन्दाज़ बेरुखी[2] वाला,
प्यार करना सिखा गया मुझको।
मैं तो समझा था एक पत्थर हूँ,
बर्फ़–सा वो गला गया मुझको।
जो जनम का रक़ीब[3] था मेरा,
वह सनम[4] से मिला गया मुझको।
जिसने सोने दिया नहीं बरसों,
गा के लोरी सुला गया मुझको।
मैं तो माज़ी[5] भुलाए बैठा था,
आईना[6] वह दिखा गया मुझको।
जब भी आया खुशी का इक झोंका,
ग़म की चादर उढ़ा गया मुझको।

1 कोशिश, 2 उपेक्षा पूर्ण व्यवहार, 3 किसी एक ही स्त्री से प्रेमी आपस मे रकीब कहलाते हैं 4 प्रेमिका 5 बीता हुआ 6 शीशा दपर्ण

उनके गम से मिरा दिल बहलता रहा

उनके ग़म से मिरा दिल बहलता रहा,
दर्द की छाँव मे ज़ख्म पलता रहा।
रूप की धूप से बच के जाता कहाँ,
बर्फ़ की तरह पल पल पिघलता रहा।
रोज़ उसके तग़ाफ़ुल[1] ने दी ज़िंदगी,
रोज़ जीने का पहलू बदलता रहा।
देखिए तो बशर[2] भीड़ के साथ है,
सोचिए तो अकेला ही चलता रहा।
डूबते और निकलते रहे मिह्र–ओ–मह[3],
रात दिन एक जादू सा चलता रहा।
अब कोई आग उसको जलाएगी क्या,
प्यार की आग मे जो कि जलता रहा।
क़द्र जिसने न की वक्त की वक्त पर,
ज़िंदगी भर वो फिर हाथ मलता रहा।

---

1. उपेक्षा 2. व्यक्ति, मनुष्य 3 सूरज और चाँद।

धूप है तेज बहुत राहों में

धूप है तेज़ बहुत राहो में,
काश ठहरूँ तिरी निगाहो में।

छोड़ कर हर खुशी को राहो मे,
आगए आपकी पनाहो[1] में।

पा सका उम्र भर न वो साहिल[2],
जो भटकता रहा हवाओ में।

रिंद[3] कर दे निसार[4] मैखाना[5],
ऐसी मस्ती है उन निगाहो मे।

प्यार तो दो दिलो का सगम है,
क्यो भटकते हो इन अदाओं में।

कौन है किसकी दास्ताँ[6] सुनता,
दर्द कितना भी हो सदाओ[7] में।

पाक–दामानी[8] का वह दम भरता,
है जो जीता रहा गुनाहों मे।

लड़खड़ा कर कही न गिर जाऊँ,
थाम लो मुझको अपनी बाहो मे।

तुमको गिरने न देगे हम हर्गिज़,
हम तुम्हारे हैं खैरख़्वाहों[9] मे।

ज़ख़्म झेले है इस क़दर मैंने,
टीस बाक़ी नही है घावों में।

---

1. रक्षा. हिफाजत 2. किनारा 3 शराबी 4 कुर्बान 5 शर
7 आवाज़ों 8 पवित्रता 9 भलाई चाहने वाले शुभ चिन्त

सबसे मिलने का सिलसिला रखना

सबसे मिलने का सिलसिला रखना,
तन्हा जीने का हौसला रखना।
जब कभी आए दिल किसी पर तो,
हो सके उससे फ़ासला रखना।
ज़िंदगी कामयाब करनी हो,
सामने कोई मरहला[1] रखना।
कितना पाया है, कितना खोया है,
खुद ही तुम इसका फ़ैसला रखना।
जब भी भर जाए दिल ज़माने से,
किसी मुफ़लिस[2] का मसअला[3] रखना।
आज जो दोस्त कल वही दुश्मन,
इसका दिल मे न कुछ गिला[4] रखना।
दिल की फितरत[5] तो है बहकना ही,
इसको इतना न मनचला रखना।
आज भी हम वफ़ा पे क़ायम है,
बेवफ़ा से तो क्या गिला रखना।
है बदलनी जहाँ की सूरत तो,
कुछ भी हो दिल में वल्वला[6] रखना।
याद आए अगर शहीदो की,
सामने अपने कर्बला[7] रखना।

---

1. मंज़िल, कठिन काम, 2 गरीब, 3 समस्या, 4. शिकायत, 5.स्वभाव, 6 उत्साह उमंग 7 ईराक का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुए थे और जहाँ उनकी मजार है

आप क्यों इतने मेरे प्रतिकूल है

आप क्यो इतने मेरे प्रतिकूल[1] है,
मार्ग मे पहिले ही कितने शूल[2] है।
पड़ गया हूँ बीच मैं मझधार के,
दूर मुझसे आज सारे कूल[3] है।
आप से तुलना भला कैसे करे,
आपके पैरों की हम तो धूल है।
है सहस्रों[4] फूल तो उद्यान[5] मे,
देवता पर जो चढ़े वे फूल है।
दूसरों को लाँछना देते है क्यों,
हम स्वय अपने कहाँ अनुकूल[6] है।
जो क्षमा कर दे वही तो है बड़ा,
होती जीवन मे सभी से भूल है।

खिलाफ 2 काँटे 3 किनारे 4 हजारो 5 बाग 6 माफिक

दोस्तों ने तो दोस्ती बेची

दोस्तो ने तो दोस्ती बेची,
हमने उनके लिये खुशी बेची।
ले सकूँ चन्द और साँसे मै,
क़तरा क़तरा ये ज़िंदगी बेची।
इससे बढ़कर अज़ाब[1] क्या होगा,
चंद सिक्कों में लाड़ली बेची।
न सताएं हसीन राते कभी,
एक बिधवा ने चाँदनी बेची।
पेट भरने को रोते बच्चो का,
बीच बाज़ार ही खुदी[2] बेची।
बेवफ़ा हो गया है जब साया,
हमने घबरा के रोशनी बेची।
अब भी आया नही भरोसा उसे,
जिसकी ख़ातिर ही बदगी बेची।
कैसी मजबूरियाँ रही होगी,
जिसने खुद अपनी जानकी बेची।

1 पापों का वह दड जो यमलोक में मिलता है यातना पीडा 2 स्वाभिमान

आदमी आदमी को खाता है

आदमी आदमी को खाता है,
और फिर भी न कुछ वो पाता है।
खुद ही बुनता है जाल चारों तरफ,
ज़िन्दगी भर निकल न पाता है।
है गुलतफ़हमी हर किसी को यही,
सिर्फ़ उसका ही सच से नाता है।
क्यों हो ग़म मे शरीक उसके कोई,
जो किसी के यहाँ न जाता है।
दोस्ती का दिया है कैसा सिला[1],
करके बदनाम मुस्कुराता है।
दिल दुखाता है जो किसी का भी,
सो नही रात मे वो पाता है।
सीधा सच्चा उसूल[2] क़ुदरत[3] का,
जैसा करता वो वैसा पाता है।
चन्द साँसे ही अब तो बाक़ी है,
बाज़ फिर भी नहीं वो आता है।

1 इनाम पुरस्कार 2 नियम 3 प्रकृति

झूठा वादा न मुझसे करिए आप

झूठा वादा न मुझसे करिए आप,
दूर इतना न मुझसे रहिए आप।
रोज़ ख़्वाबों मे मुझसे मिलते हो,
दिन मे आके कभी तो मिलिए आप।
जिस्म मिट्टी है, सिर्फ़ मिट्टी है,
उसका कुछ न भरोसा करिए आप।
पल मे जीना है, पल मे मरना है,
फूल की तरह हँसते रहिए आप।
आप से एक अर्ज़[1] है मेरी,
बोझ इतना न दिल पे रखिए आप।
आप तो रूह मे बसे है मिरी,
जिस्म के भी क़रीब रहिए आप।
भूल जाना बहुत ही आसाँ है,
याद रखने की बात करिए आप।
प्यार करने का जुर्म मैने किया,
हो सके तो मुआफ़ करिए आप।
पास रहकर भी फ़ासिला कितना,
फ़ासिला रख के पास रहिए आप।
अब तो बस इक यही तमन्ना[2] है,
हो सके दिल मे मुझको रखिए आप।

विनती, निवेदन 2 इच्छा

आदमी आदमी को खाता है

आदमी आदमी को खाता है,
और फिर भी न कुछ वो पाता है।
खुद ही बुनता है जाल चारों तरफ
जि़दगी भर निकल न पाता है।
है गृलतफ़हमी हर किसी को यही,
सिर्फ़ उसका ही सच से नाता है।
क्यो हो गम मे शरीक उसके कोई,
जो किसी के यहाँ न जाता है।
दोस्ती का दिया है कैसा सिला[1]
करके बदनाम मुस्कुराता है।
दिल दुखाता है जो किसी का भी
सो नहीं रात में वो पाता है।
सीधा सच्चा उसूल[2] कुदरत[3] का,
जैसा करता वो वैसा पाता है।
चन्द साँसे ही अब तो बाकी है,
बाज़ फिर भी नहीं वो आता है।

1 इनाम, पुरस्कार 2 नियम, 3 प्रकृति

झूठा वादा न मुझसे करिए आप

झूठा वादा न मुझसे करिए आप,
दूर इतना न मुझसे रहिए आप।
रोज़ ख़्वाबो मे मुझसे मिलते हो,
दिन मे आके कभी तो मिलिए आप।
जिस्म मिट्टी है, सिर्फ़ मिट्टी है,
उसका कुछ न भरोसा करिए आप।
पल मे जीना है, पल में मरना है,
फूल की तरह हँसते रहिए आप।
आप से एक अर्ज़[1] है मेरी,
बोझ इतना न दिल पे रखिए आप।
आप तो रूह में बसे है मिरी,
जिस्म के भी क़रीब रहिए आप।
भूल जाना बहुत ही आसॉ है,
याद रखने की बात करिए आप।
प्यार करने का जुर्म मैने किया,
हो सके तो मुआफ़ करिए आप।
पास रहकर भी फ़ासिला कितना,
फ़ासिला रख के पास रहिए आप।
अब तो बस इक यही तमन्ना[2] है,
हो सके दिल में मुझको रखिए आप।

इस जहाँ में हर कोई बेगाना है

इस जहाँ में हर कोई बेगाना[1] है,
अपने मतलब का मगर दीवाना है।
हर किसी की ज़िदगी अफ़साना[2] है,
आदमी ख़ाली–सा एक पैमाना[3] है।
मय[4] मुझे मदहोश कर सकती नही,
मेरे अन्दर प्यार का मयख़ाना[5] है।
मै तो समझा था कि मै आज़ाद हूँ,
क्यो क़फ़स[6] से अब मिरा याराना है।
भीड़ मे रहकर भी जो तन्हा रहे,
कौन जाने किसका वो दीवाना है।

1 पराया 2 कहानी 3 शराब का गिलास 4 शराब 5 ... 6 पिंजड़ा

को दिल से मिलने में कुछ वक्त तो लगता है

दिल को दिल से मिलने मे कुछ वक्त तो लगता है,
नयी इमारत बनने मे कुछ वक्त तो लगता है।

बुरा वक्त आजाए तो भी धीरज रक्खे मन मे हम,
सुबह का सूरज उगने में कुछ वक्त तो लगता है।

पीठ में मेरी वार किया एक दोस्त ने मेरे ही,
गहरे ज़ख्म को भरने में कुछ वक्त तो लगता है।

उनको मैने बहुत मनाया फिर भी कुछ न बोले वो,
दिल को जुबॉ तक आने में कुछ वक्त तो लगता है।

चलते–चलते ही पहुॅचेगे एक दिन अपनी मज़िल पर,
दूर की मज़िल पाने मे कुछ वक्त तो लगता है।

मेरी खता[1] को बख़्शो[2] कोई फिर से ख़ता न होगी अब,
अच्छा इन्सॉ[3] बनने में कुछ वक्त तो लगता है।

2 माफ करो 3 इन्सान

और कुछ मुझको तो अब तेरे सिवा याद

और कुछ मुझको तो अब तेरे सिवा याद नही
ये वफ़ा[1] का है सिला[2] या कि गिला[3] याद नही।

फूल तो और की बगिया का है तू मेरे सनम,
कब महक ने तेरी मदहोश किया याद नही।

मुस्कुराहट तेरी ऐसी थी कि मै डूब गया,
गुम हुआ ऐसा कि अपना ही पता याद नही।

तू तो तस्वीर कला की है मुजस्सम[4] ऐसी,
जब से देखा है तुझे मुझको खुदा याद नही।

तेरी कुर्बत[5] के सदा देखे है सपने मैने
हो गया कब से मै दीवाना तेरा याद नही।

अब किसी और के घर मे तू अमानत[6] मेरी,
किस खता[7] पर मै हुआ तुझसे जुदा याद नही।

तू है मेरी, तुझे पूजूँ कि तेरा जाप करूँ,
फल यह है कितनी तपस्या से मिला याद नही ।

प्यार 2 पुरस्कार 3 शिकायत 4 साक्षात 5 नजदी
6 धरोहर 7 गलती

प्यार में गर असर नहीं होता

प्यार में गर असर नहीं होता,
ज़िदा कोई बशर नहीं होता।
दोस्ती सोचकर ही करना तुम,
आज कल हमसफ़र[1] नही होता।
प्यार है कितना उसको वर्ना वो,
ख़्वाब में रात भर नही होता।
न बदलती लकीरें हाथो की,
दिल सिकदर अगर नहीं होता।
यह तो उनकी इनायते[2] वर्ना,
मुझमे कोई हुनर नहीं होता।
प्यार पर अपने है भरोसा जिन्हे,
उनको दुनिया का डर नही होता।
जान भी आप दे दे जिनके लिये,
फिर भी उन पे असर नही होता।
क्यों किसी से मिसाल[3] देते हो,
कोई एक–सा बशर नहीं होता।
इतना नज़दीक कैसे आते वो,
प्यार उनको अगर नही होता।
जो भी आया है उसको जाना है,
कोई इन्सॉ अमर नहीं होता।

साथ चलने वाला 2 कृपाए 3

आदमी खुद खुदा का साया है

आदमी खुद खुदा का साया है,
बाक़ी जो है वो सिर्फ़ माया है।
कौन किसका है दोस्त दुनिया मे,
किसने किसको यहॉ निभाया है।
हर गुनाह की हमे मिलेगी सज़ा,
सब फ़क़ीरों ने यह बताया है।
कोई तो लिख रहा है सबका हिसाब,
हमने फिर क्यो उसे भुलाया है'
दूसरो पर उठाई क्यो उँगली,
जुल्म तो आपने भी ढाया है।
दोगे दुख तो मिलेगा तुमको दुख,
ये हमेशा से होता आया है।
जैसे आए हैं वैसे जाएगे,
कुछ कमाया न कुछ गँवाया है।

मुश्किलें हर क़दम थी राहों में

मुश्किलें हर क़दम थी राहो मे,
आए हैं आपकी पनाहों[1] मे।
चार तिनको का आशियॉ[2] मेरा,
है वही बर्क़[3] की निगाहो मे।
चाहे जितने गुनाह कर लें हम,
चैन मिलता नही गुनाहो में
परखा अच्छी तरह से अपना दिल,
सिर्फ तुम ही हो मेरी चाहो मे।
अब तो बाक़ी यही तमन्ना[4] है,
काम आऊँ दुखी की आहो मे।
सारी दुनिया की ठोकरे खाकर,
हम समाए खुदा की बाहो मे।

---

1 रक्षा हिफाज़त 2 घोसला घर 3 बिजली 4 इच्छा

रातें गुज़रीं जागते जिन के लिये

रातें गुज़री जागते जिनके लिए,
वो नही मिल पाए एक दिन के लिए।
हर लम्हा गुज़रा है मुश्किल से बहुत,
इस मिलन के और इस दिन के लिये
वो नही अब तक हमे पहचानते,
आए दुनिया मे है हम जिनके लिये।
लाल ही हो लाल सारी चूड़ियाँ,
भेजनी है एक सुहागिन के लिये।
उसके एहसानो के बदले दूँ ही क्या,
जान भी हाज़िर है मुहसिन[1] के लिये।
ढाँकती अपने ही हाथो से बदन,
कोई कपड़ा दे अभागिन के लिये।
जितना चाहे वो सता लें मुझको और,
मै हूँ ज़िन्दा सिर्फ़ कुछ दिन के लिये।

जिसने एहसान किया है

री चाहत मे सिवा उसके कोई नाम नहीं

मेरी चाहत में सिवा उसके कोई नाम नहीं,
ऐसा लगता है मिरी ज़ीस्त[1] में आराम नही।
हर लम्हा, हर घड़ी खोया हूँ उसके ख्यालो मे,
है सुकूँ दिल को कि हाथो मे मिरे जाम नही।
मिल गयी मंजिले मक़सूद[2] उसे पाकर ही,
ज़िदगी को है यकीं अब तो वो नाकाम[3] नहीं।
ये चला आया है दुनिया का हमेशा से उसूल,
बद तो अच्छा है मगर अच्छा है बदनाम नही।
ऑख है सबपे नज़र होती है बस कुछ के पास,
पास हे जिनके नज़र रहते वो गुमनाम[4] नहीं।
है वो दीवाना यहॉ चाहता जो चैन–ओ–सुकूँ,
यह है दुनिया यहॉ पलभर को भी आराम नही।
पाना मंज़िल है तो मंज़िल पे नज़र रक्खो बस।
चलते रहना मगर सोचना अंजाम[5] नहीं।
जीना सबको है यहॉ चार दिनो तक फिर भी,
ज़िंदगी तेरे उजालों की कोई शाम नही ।
काम जो आते हैं औरो के लिये दुनिया मे,
वो ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम[6] नही।
दर पे ऑखे है टिकी काश वो आ जाए अब,
आखिरी वक्त है उनका कोई पैग़ाम[7] नही।
तुम बहुत अच्छे हो, लेकिन हूँ बुरा मैं भी नहीं,
ये अलग बात कि दुनिया मे मिरा नाम नही।
दुश्मनी आसॉ मगर दोस्ती मुश्किल है बहुत ,
दुश्मनी करके कभी मिलता है आराम नहीं।
ये गुनाह मैंने किया चाहा है दिल से उनको,
एक बस इसके सिवा, और कोई इल्ज़ाम नहीं।

इच्छित लक्ष्य 3 व्यर्थ 4 बिना नाम के 5 परिणाम 6 बिना नाम के

कुछ नही इस जहाँ मे बाहर है

कुछ नही इस जहाँ में बाहर है,
जो भी है आदमी के अन्दर है।
भूल जाना तो है बहुत आसाँ,
याद रखता है वो पयम्बर[1] है।
जो भी अच्छा है कुछ बुरा भी है,
इन्साँ कमजोरियों का पैकर[2] है।
बावफ़ा कोई, बेवफ़ा कोई
हर किसी का अलग मुक़द्दर[3] है।
दिल मे सबके ही प्यार रहता है,
दिल तो सबका ही एक समन्दर है
राम चाहे बनाऊँ या रावण,
हाथ मे मेरे सिर्फ़ पत्थर है।
सब ही अच्छे बुरा नहीं कोई,
सारी दुनिया ही मुझसे बेहतर है।
अपनी तक़दीर पर न रोना कभी,
हमको सब कुछ यहाँ मयस्सर[4] है
हार को जीत मे बदल दूँगा,
मेरे अन्दर छुपा सिकन्दर है।

---

1. अवतार, पैगम्बर 2 शरीर, जिस्म 3. भाग्य, 4. प्राप्त

अपनी तक़दीर कुछ इस तरह बनाई जाए

अपनी तक़दीर कुछ इस तरह बनाई जाए,
दुश्मनो से भी कभी ऑख मिलाई जाए।

आश्यॉ[1] बर्क़[2] के साए मे बनाएगे ज़रूर,
ऐसे जज़्बात[3] की बारात सजाई जाए।

अब नही दोस्त ज़माने में मयस्सर[4] है कही,
अपना खूॅ दे के नयी फ़स्ल उगाई जाए।

दूसरो की ही बुराई मे जो रस लेते है,
उनकी तस्वीर उन्हे आज दिखाई जाए।

जो मुहब्बत करे, नफ़रत से सदा दूर रहे,
ऐसे इन्सानो की एक बस्ती बसाई जाए।

बेवफ़ाई का जो देते रहे इल्ज़ाम मुझे,
उनके दिल की उन्हे आवाज़ सुनाई जाए।

कौन झूठा है यहाँ, कौन है सच्चा ऐ दोस्त,
ऐसे इन्सानो की पहचान बताई जाए।

नक्श[5] है दिल में मिरे सिर्फ़ उसी की तस्वीर,
सबकी तस्वीर मिरे दिल से हटाई जाए।

दर बदर ढूँढ रहा था मै जिसे दुनिया मे,
वो मिरे दिल में है ये बात बताई जाए।

---

1 घोसला, घर 2. बिजली 3 भावनाए 4 उपलब्ध 5. अकित, खुदा हुआ

हम उनकी याद को दिल से लगाए

हम उनकी याद को दिल से लगाए बैठे है,
उधर वो प्यार से नज़रे चुराए बैठे है।

भड़क न जाए कही और प्यार के शोले,
हम अपनी ऑख मे आँसू छुपाए बैठे है।

बुरा लगेगा उन्हे फिर भी मै कहूँगा ज़रूर,
वो मुझसे बेवजह दूरी बनाए बैठे है।

तुम्हारे प्यार का मुझको यही मिला है सिला',
न जाने कितनों को दुश्मन बनाए बैठे है।

यक़ीन है कि कभी भी न उनको भूलूँगा,
दिलो–दिमाग़ पे ऐसे वो छाए बैठे है।

उतर सके न कभी उनके प्यार का नश्श ,
हम ऐसे जाम लबों से लगाए बैठे है।

यक़ीन है उन्हें पहुँचेगी रोशनी इसकी,
हम अपने दिल में जो शम्मा जलाए बैठे है

ख़्याल सबका उसे मिरा ही नहीं

ख़्याल सबका उसे मिरा ही नही,
फिर भी मुझको कोई गिला ही नही।
वो निगाहो से लाख दूर सही,
दिल से होता मगर जुदा ही नही।
मैने चाहा कि उससे दूर रहूँ,
क्या करूँ दिल तो मानता ही नही।
है निगाहो मे दूर तक वो ही,
अब मुझे अपना कुछ पता ही नही।
नशश जो प्यार ने दिया मुझको,
मैकशी[1] मे मुझे मिला ही नही।
पास रहिए या दूर रहिए अब,
मुझको अब इससे वास्ता ही नही।
सब रहे खुश हमेशा दुनिया मे,
इससे बढ़कर कोई दुआ ही नही।
अब तो इतने क़रीब है हम–तुम,
हममे अब कोई फ़ासिला ही नही।
हमने पूजा है इसलिये पत्थर,
हमने देखा कहीं खुदा ही नही।

शराब पीने में

आज आये हमें मनाने हैं

आज आये हमें मनाने है,
आपके भी अजब बहाने है।
उँगलियाँ और पर उठाऊँ क्यो,
मेरे अपने भी तो फ़साने हैं।
क्या करेंगे सुना के हाले ग़म,
ज़ख़्म दिल के हमे छुपाने है।
मौत और ज़िदगी में फर्क नही,
जागने–सोने के बहाने हैं।
कतरे–कतरे मे खून के वो है,
उनके सिजदे[1] मे सर झुकाने है।
मुझको मालूम है वो आएंगे,
दिल के ऐसे मिरे तराने[2] हैं।
जिस्म क्या रूह तक भी बिक जाती,
प्यार के ऐसे भी फसाने हैं।

1 ईश्वर के लिये सर झुकाना 2 गाने

कौन से ग़म की मय पिये हैं वो

कौन से ग़म की मय[1] पिये है वो,
डगमगाते हुए जिए है वो।
जो भी आँसू बहे न ऑखो से,
क़हक़हो मे डुबो दिए है वो।
किस ख़ता[2] की है ये सज़ा पाई,
दूर क़सदन[3] मुझे किए है वो।
दिल की धड़कन ये कह रही मुझसे,
सिर्फ़ मेरे लिये जिए हैं वो।
नश्शा उतरेगा तब वो समझेगे,
हुस्न की मय अभी पिए है वो।
अब भला किस पे एतबार[4] करूँ,
छोड़कर मुझको चल दिए है वो।
लब[5] को खोला है जब कभी मैंने,
हॅस के महफ़िल से चल दिए है वो।
यह अलग बात साथ साथ रहे,
सिर्फ़ अपने लिए जिए है वो।
रोशनी दे रहे थे जो कल तक,
आज बुझते हुए दिए हैं वो

क्या बताऊँ ये क्यों किया मैंने

क्या बताऊँ ये क्यो किया मैंने,
अपने होठो को सी लिया मैने।
प्यार मे उनके फ़ासला–सा रहा,
इस सितम[1] को भी सह लिया मैने।
जब भी उतरा खुमार[2] यादो का,
जाम पर जाम पी लिया मैंने।
वक्ते रुख़सत[3] थे अश्क[4] ऑखो मे,
उनको किस ज़ब्त[5] से पिया मैने।
अब तो वह चाहने लगा है मुझे,
ज़हर जिसके लिये पिया मैने।
जन्म–जन्मो का साथ था जिससे,
उसको पा के भी खो दिया मैंने।
उसकी क़ुर्बत[6] हो या तगाफ़ुल[7] हो,
ज़िदगी तुझको जी लिया मैने।
जो जलाने लगा था हाथो को,
उस दिये को बुझा दिया मैने।

---

1 अत्याचार 2 नशा 3 बिदाई 4 ऑसू, 5 सहनशीलता
7 उपेक्षा

ग रहा है कि करवट बदल रही है आज

ये लग रहा है कि करवट बदल रही है आज,
हयात[1] मौत के साये मे पल रही है आज।

कभी बहक के चली थी सम्हल रही है आज
ये जीस्त[2] किसके इशारे पे चल रही है आज।

ये उस निगाह की मस्ती है और कुछ भी नही,
शराब बन के जो नस–नस मे ढल रही है आज।

यही नही कि हर इक सॉस है हमी पर बार[3],
हयात किसके सम्हाले सम्हल रही है आज।

गुनाह हमने किया उस पे एतबार[4] किया,
उस एक शै[5] पे जो पल–पल बदल रही है आज।

जो एक पल को भी मुझसे कभी जुदा न हुआ।
जुदाई उसकी बहुत दिल को खल रही है आज,

मिरे ख़्याल मे मदिर है वह वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की इक शम्मा[6] जल रही है आज।

जि़दगी 3 बोझ 4 विश्वास 5 चीज़ 6 दीपक

रंग करवट वक्त की लाने लगी

रग करवट वक्त की लाने लगी,
मेरी दुनिया खुद मुझे खाने लगी।
गैर तो है गैर, उनसे क्या गिला[1],
दोस्तो मे बेरुखी[2] आने लगी।
तुम तो कहते थे न यूँ मायूस[3] हो,
यह उदासी तुम पे क्यो छाने लगी।
तुम गये क्या मेरी दुनिया ही गयी,
अब तो तन्हाई[4] मुझे भाने लगी।
वह नज़र जो मिस्त-खजर[5] थी कभी,
क्या हुआ जो फूल बरसाने लगी।
मै तो तेरे साथ गोया[6] मर गया
जिन्दगी क्यो मुझको भरमाने[7] लगी
जाने कब होगी तिरी नज़रे करम[8],
जिन्दगी की शाम भी आने लगी।

---

1 शिकायत 2 उपेक्षा 3 निराश 4 अकेलापन 5 खंजर की तर
7 भ्रम में डालना 8 कृपा दृष्टि

अपनी खुद्दारी को वो छलते हैं

अपनी खुद्दारी[1] को वो छलते है,
जो हवाओ के साथ चलते है।
वो नही अपनी जगह से हिलते,
जो उसूलो[2]पे अपने चलते हैं।
किस क़दर है अजीब ये दुनिया,
ख़ामख़ाह[3] लोग मुझसे जलते हैं।
दोस्तो की बड़ी इनायत[4] है,
आस्तीनो मे साँप पलते हैं।
जिनका हमने कभी बुरा न किया,
किसलिये हम उन्ही को खलते है।
क्या हुआ आज उनकी आँखो से,
अश्क[5] शबनम[6] की तरह ढलते है।
मौत के हाथ बढ़ रहे आगे,
बर्फ़ की तरह जिस्म गलते हैं।

2 सिद्धातो 3 व्यर्थ में फिजूल में 4 कृपा 5 आँसू 6 ओस

वादा करके वफ़ा नहीं होता

वादा करके वफ़ा[1] नहीं होता,
फ़र्ज़ उनसे अदा नही होता।

फ़ासिले फिर भी दिल मे रहते है,
जब कोई फ़ासिला नही होता

प्यार मे खाके ठोकरे लाखो,
कम मेरा हौसला नही होता।

मंज़िले उस तरफ़ भी होती है,
जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

मरने जीने पे इख़्तियार[2] नही ,
कोई इन्सॉ खुदा नही होता।

मुझसे कोई भी रूठ सकता है,
मैं किसी से खफ़ा[3] नही होता।

बेरुख़ी उसकी सह रहे है हम,
फिर भी हमसे गिला[4] नहीं होता।

दोस्त किसको कहे किसे दुश्मन,
हमसे यह फ़ैसला नही होता।

वक्त कुछ इस तरह बदलता है,
जिसका हमको पता नही होता।

1 पूरा 2 अधिकार 3 नाराज़ 4 शिकायत

नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र क
तलाश है।

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश है,
हुई जिससे कोई ख़ता नही, मुझे उस बशर[1] की तलाश है।
मेरी जिदगी के सुख और दुख, ये तो रात दिन की तरह से है,
जो न पहुॅचे शाम तलक कभी, मुझे उस सहर[2] की तलाश है।
मुझे लग रहा है कि नाखुदा[3] नही अपने होशो–हवास मे,
जो सफ़ीना[4] पार लगा सके,उसी बाहुनर[5] की तलाश है।
हुआ क्या है आज निजाम[6] को, कहीं अम्न[7] है न सुकून[8] है,
जो फजा मे आग लगा सके, मुझे उस शरर[10] की तलाश है।
क्या अजब सियासी यह दौर है, हुए लोग इसमे है बदगुमॉ[11],
जहॉ दोस्त बन के सभी रहे, मुझे उस नगर की तलाश है।
कई मोड़ आए हयात[12] मे, कभी सुख मिला कभी दुख मिला,
मैं हूॅ आज ऐसे मक़ाम पर, जहॉ दीदावर[13] की तलाश है।
किए मैंने कितने गुनाह हैं, नही उनका कोई हिसाब है,
जो मुआफ़ फिर भी मुझे करे, किसी उस नज़र की तलाश है।
मै गुनाहगार[14] ज़रूर हूँ, कि मिरी ख़ता[15] मिरा इश्क़ है,
जो गले से मुझको लगा सके, मुझे उस बशर की तलाश है।
मै भटक रहा हूॅ इधर–उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर[16]
जो मिला सके मुझे मुझ ही से, उसी राहबर [17] की तलाश है।

---

5 2 सुबह 3 मल्लाह 4 किश्ती, नाव 5 होशियार,व्यक्ति 6 शासन–त
1 8. चैन 9. वातावरण 10. चिगारी 11 किसी की ओर बुरा ख्
ला 12. जीवन 13 पारखी व्यक्ति 14 अपराधी 15. अपराध 1
17 रास्ता दिखाने वाला, मार्गदर्शक

हर सहर से वो हसीं रात हुआ करती है

हर सहर[1] से वो हसी रात हुआ करती है।
दिल की जब दिल से खुली बात हुआ करती है।

बात करने को रहा करते हैं जिससे बेचैन,
जब वह मिलता है, कहॉ बात हुआ करती है।

मैने जिस दोस्त की ख़ातिर है मिटाया खुद को,
वह न मिलता है, न अब बात हुआ करती है।

वह ख़्यालो मे भी आए तो खुशी के मारे,
ऑख से अश्क[2] की बरसात हुआ करती है।

अजनबी जैसे मिले और गुज़र जाए यूँ ही,
इस तरह उनसे मुलाक़ात हुआ करती है।

देख तो लेते है हम उनको भरी महफ़िल मे,
यह अलग बात नहीं बात हुआ करती है।

दिल मे दूरी है, निगाहों मे अदाए–कुर्बत[3],
हुस्न वालो की अजब बात हुआ करती है।

---

1. सुबह 2. ऑसू 3. नजदीक होने का दिखावा

उम्र कट जायेगी क्या वक्त को रोते रोते

उम्र कट जायेगी क्या वक्त को रोते रोते,
मौत आ जायेगी बस बोझ को ढोते ढोते।

क्या कोई जिक्र मिरा उनकी जुबाँ पर आया,
चौक उट्ठा हूॅ मै क्यों नीद में सोते सोते।

उनको एहसास नही है कि ये दिल उनका है,
इसको मै कैसे बचा पाया हूॅ खोते खोते।

इस कदर हम पे पड़ा उनकी जुदाई का असर,
खो गयी आँख की बीनाई[1] भी रोते रोते ।

वह तो कहिए कि नजर उसने उठाई ही नही,
टल गया आज कोई हादिसा[2] होते होते ।

---

1 ज्योति 2 दुर्घटना

बेवफ़ा तुझसे प्यार कर बैठे

बेवफ़ा तुझसे प्यार कर बैठे,
दिल को हम बेक़रार[1] कर बैठे।

उनको आना न था, न वह आये
और हम इंतज़ार कर बैठे।

हम को जिन पर बहुत भरोसा था,
वो ही बदनाम प्यार कर बैठे।

जो मिरी जान का हुआ दुश्मन,
जान उस पर निसार कर बैठे।

जिन निगाहो में सिर्फ़ धोखा था,
उन निगाहों से प्यार कर बैठे।

नाज़ था जिनकी दोस्ती पे हमे,
पीठ पर वो ही वार कर बैठे

1. बेचैन

हर कोई दे रहा नसीहत है

हर कोई दे रहा नसीहत है,
ये भी एक तरह की सियासत है।
कितने ज़ालिम है आज के रहबर[1],
हर तरफ़ उनकी ही शरारत है।
हिन्दू मुस्लिम न सिख ईसाई कोई,
यह तो बस आपसी जहालत[2] है।
आओ मिल बैठ कर हँसे बोले,
वक्त की तो यही ज़रूरत है।
इसॉ–इसाँ मे है नही दूरी,
एक को दूसरे से उल्फ़त है।
रहनुमा[3] बन के हमको लूट रहे,
ऐसी इस दौर की सियासत है।
वो जो पाकीज़गी[4] सिखाते है,
उनके दिल मे भरी अदावत[5] है।
सबके दिल में खुदा का जल्वा[6] है,
हर बशर कितना खूबसूरत है।
दोस्त ही दोस्त को बुरा कहते,
आज की दोस्ती मुसीबत है।
वो जो हँस हँस के बाते करते है,
उनके दिल मे कहॉ मसर्रत[7] है।
मै हूँ अच्छा बहुत बुरा है वो,
हर किसी की यही शिकायत है।
दोस्ती है तो दोस्ती के लिये,
आदमी की यही शराफ़त है।
सच्चे इंसान बन सको तो बनो,
बस यही एक मेरी वसीयत है।

। वाले 2 3 मार्गदर्शक 4 पवित्रता 5 दुश्मनी 6

एक कृत्रिमता का जीवन ढो रहे ह

एक कृत्रिमता[1] का जीवन ढो रहे हम,
चेहरे पे चेहरा लगाकर रो रहे हम
दिल मे क्या और क्या ज़ुबाँ पर कौन जाने
बीज बर्बादी के अपनी बो रहे हम
देश की उन्नति का आया जब सवाल,
ओढ़कर लम्बी सी चादर सो रहे हम
पूर्वजों ने जो विरासत मे दिया,
उस धरोहर को स्वयं ही खो रहे हम।
कोई मरहम अब लगाता ही नही,
ऑसुओ से ज़ख़्म अपने धो रहे हम।

1 बनावटी

एक कृत्रिमता का जीवन ढो रहे ह

एक कृत्रिमता[1] का जीवन ढो रहे हम,
चेहरे पे चेहरा लगाकर रो रहे हम।

दिल मे क्या और क्या ज़ुबॉ पर कौन जाने,
बीज बर्बादी के अपनी बो रहे हम।

देश की उन्नति का आया जब सवाल,
ओढ़कर लम्बी सी चादर सो रहे हम।

पूर्वजो ने जो विरासत मे दिया,
उस धरोहर को स्वयं ही खो रहे हम।

कोई मरहम अब लगाता ही नही,
ऑसुओ से ज़ख़्म अपने धो रहे हम।

1 बनावटी

हर तरफ़ एक अजब तमाशा है

हर तरफ़ एक अजब तमाशा है,
आदमी हादिसों[1] का मारा है।
बैठकर दिल की गाँठे खोले हम,
दूर रहकर कहाँ गुज़ारा है।
प्यार ने सबको सबसे जोड़ा है,
अब वो अपना है जो पराया है।
मौत आए तो टल नही सकती,
वक्त ने कब किसे बचाया है
सोचने, बोलने में, करने में,
एक होकर हमें दिखाना है।

1. दुर्घटनाओं

वह तो प्यार के मारे हैं

वह तो प्यार के मारे है,
हम भी दिल से हारे हैं।
गिनते गिनते काटी राते,
अर्श[1] पे कितने तारे हैं।
कोई न मिल सकता उन जैसा,
वह दुनिया से न्यारे है।
प्यार मे दुनिया की हर दौलत,
हम तो उन पे वारे है।
पास रहे या दूर रहें वो,
इन ऑखो के तारे हैं।
प्यार का नश्शा जब चढ़ता है,
सब इन्सॉ ही हारे है
कितना सुकूँ मिलता जब सोचे,
हम उनके वो हमारे है।

़गी मुझसे मिरा सब हिसाब माँगे आज

ज़िंदगी मुझसे मिरा सब हिसाब माँगे आज,
हर एक सवाल का अपने जवाब माँगे आज।

तिरी निगाह मे ऐसा सुरूर[1] है साक़ी,
कि उस निगाह की हर दिल शराब माँगे आज।

हमेशा मुझसे जो बेपर्दा हो के मिलता था,
वो जाने किसलिए मुझसे हिजाब[2] माँगे आज।

अब अपने आप को कब तक फ़रेब दोगे तुम,
तुम्हारा दिल ही ये तुमसे जवाब माँगे आज

मुझे पता ही नही कब गुनाह कर बैठा,
अब उसका मुझसे मिरा दिल हिसाब माँगे आज।

है इसलिए भी यहाँ सच्चा सुखनवर[3] ख़ामोश,
हर एक कोई न कोई ख़िताब माँगे आज

निसार[4] खुद ही किया मैने प्यार में खुद को,
मिरी वफ़ा का कोई क्यूँ हिसाब माँगे आज।

र्दा 3 कवि, शायर 4. कुर्बान, बलिदान

तेरा सानी कोई मिला ही नहीं

तेरा सानी[1] कोई मिला ही नही,
तुझसे बेहतर कोई जँचा ही नहीं।
तू मिरे दिल पे छा गया लेकिन,
दिले नादान को पता ही नहीं।
इस बरस भी बहार आई है,
फूल दिल का मगर खिला ही नहीं।
ज़ीस्त[2] गुज़री तिरे तस्व्वुर[3] मे,
रह सका तुझसे मै जुदा ही नही।
आज जी भर के तुझको देख लिया,
कोई अरमान अब रहा ही नहीं।
अब समझते है हम ज़माने को
अब किसी से कोई गिला[4] ही नही
आईना जब भी देखा है मैने,
अक्स उसके सिवा मिला ही नहीं।
दोस्ती थी या दुश्मनी उससे,
आज तक मुझको ये पता ही नही।
जिसकी सॉसे है ज़िदगी मेरी,
वो मुझे फिर भी जानता ही नही।

1 तेरा जैसा दूसरा 2 ज़िदगी 3 4 शिकायत

...ने जीने का एक अंदाज़ सिखाया होगा

जिसने जीने का एक अदाज़[1] सिखाया होगा,
दोस्तो ने भी उसे ख़ूब सताया होगा।

वो जो कल तक था हमारा वो है अब गै़र के साथ,
दिल का ये राज़[2] मगर उसने छुपाया होगा ।

पूछा होगा जो कभी हाले मुहब्बत उससे,
अपना दिल चीर के उसने ही दिखाया होगा।

गै़र होकर भी वो अपना था कि जिसने तुमको,
हाल ग़म का मिरा रो–रो के सुनाया होगा।

पूछने पर कि लगे ज़ख़्म है कितने दिल मे,
उसने ज़ख़्मो को बहुत हॅस के छुपाया होगा।

हम अगर दोस्त है तो दोस्त मिलेगे हमको,
गुर यह दुनिया को फ़क़ीरो ने बताया होगा।

1. ...भेद 2. रहस्य

यह हक़ीक़त है कोई सपना नहीं

यह हक़ीक़त[1] है कोई सपना नहीं है
लगता जो अपना वही अपना नहीं है।
उसको पाना है तो दिल के जा क़रीब,
जिस्म छू के कुछ तुम्हे मिलना नही है।
तू अकेला सारी दुनिया है ख़िलाफ़,
डर खुदा से और कहीं डरना नही है।
मानती दुनिया हमेशा से ये बात,
ज़िंदगी सच्चाई है सपना नही है।
चाहते अपना भला तो याद रखना,
दोस्त बनना दुश्मनी करना नहीं है।
इंसाँ हो इन्सान बनकर ही रहो तुम,
बात से अपनी कभी गिरना नही है।
ज़िंदगी है मौत के आग़ोश[2] मे अब,
चलते रहना है कभी रुकना नहीं है।

दूर जितना भी उनसे जाता हूँ

दूर जितना भी उनसे जाता हूँ,
उनको उतना क़रीब पाता हूँ।
खुद को खुद से ही दूर पाता हूँ,
हर लम्हो जी के मर ही जाता हूँ।
उनसे मिलने की जुस्तजू[1] हर दम,
उनसे मिलकर बिछुड ही जाता हूँ ।
क्या पता मौत की हो कब दस्तक,
मै कफ़न ओढ़ के ही जाता हूँ।
ज़ख्म हो जाते है हरे दिल के,
जब दरे बेवफा[2] पे जाता हूँ।
क्या दूँ इल्ज़ामो का जवाब उन्हे,
होठ अपने सिये ही जाता हूँ।
एक साया–सा साथ रहता है,
मै अकेला कही न जाता हूँ।
ज़ब्त ही बेबसी है अब मेरी,
हँसता जाता हूँ, रोता जाता हूँ।
कोई आवाज़ दे रहा है मुझे,
सुनता रहता हूँ, चलता जाता हूँ।

---

1 तलाश 2 दग़ाबाज के दरवाज़े पर (उस प्रेमिका के दरवाज़े पर जिसने धोखा दिया हो

हर क़दम पर मिल रहा शैतान है

हर क़दम पर मिल रहा शैतान है,
इस ज़माने मे कहॉ इन्सान हे।
मुश्किलो से हार जो माने नही,
उसकी मंजिल तो बहुत आसान है।
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिये वरदान है।
रात दिन जो सबकी सेवा मे रहे
उसको क्या मालूम क्या सम्मान है।
ज़िदगी का कोई मक़सद[1] तय करो,
वरना तो यह ज़िदगी वीरान है।
सब यही पर ही पड़ा रह जाएगा,
ज़िदगी क्यो मौत से अन्जान[2] है।
मैं तो बदलूंगा लकीरें हाथ की,
कर्म करना ही मेरा भगवान है।
दूर हो जाएगे खुद ही फ़ासिले,
प्यार करना जब मेरा ईमान है।
कुछ तो आऊँ काम दुनिया के भी मैं,
दिल में मेरे बस यही अरमान है।
जीत सकते सारी दुनिया प्यार से,
प्यार ही तो इस जहॉं[3] की जान है।
त्याग ही इस देश की है सस्कृति,
हमको अपने देश पर अभिमान है।
दूसरे की जो खता कर दे मुआफ,
वो नहीं इन्सान वो भगवान है

लक्ष्य 2 अपरिचित 3 ससार

जो मिरा घर जलाने वाला है

जो मिरा घर जलाने वाला है,
आग वो ही बुझाने वाला है।

रात आँखों में कट गयी सारी,
अब कहाँ कोई आने वाला है।

अब निगाहे चुरा रहा है जो,
वो ही तो दिल चुराने वाला है।

आज ज़ुल्मों–सितम से दुनिया के,
प्यार ही बस बचाने वाला है।

वह जो हमदर्दियाँ जताता है,
आग खुद ही लगाने वाला है।

दोस्ती उससे हो गयी मेरी,
जो मिरा दिल दुखाने वाला है।

इतनी नफ़रत भरी है दुनिया मे,
ज़लज़ला[1] कोई आने वाला है।

भूचाल भूकंप

प्यार का खूब सिला देते हैं

प्यार का खूब सिला[1] देते है,
मुस्कुरा कर वह रुला देते है।
जिसने बर्बाद किया है हमको,
उस सितमगर[2] को दुआ देते है।
दिल मे जागी है मुहब्बत उनके,
अपना सर हम भी झुका देते है।
हमको जो भूल चुका है उसकी,
याद कर खुद को सजा देते हैं।
दोस्त की शक्ल में जो है दुश्मन,
उसको जीने की दुआ देते हैं।
ज़ुल्म[3] ढाना ही है फ़ितरत[4] जिसकी,
उसको हम अपना पता देते है।

1 पुरस्कार इनाम 2 अत्याचारी 3 4 आदत

उसे बेवफ़ा मैं समझ गया, मिरी सोच कितनी अजीब है

उसी बेवफ़ा मै समझ गया, मिरी सोच कितनी अजीब है,
वह हज़ार मुझपे सितम करे, मिरे दिल के फिर भी क़रीब है।

कोई किस पे आज यक़ी करे, कि हर एक देता दग़ा यहाँ,
जिसे दोस्त कोई न मिल सके, वही आदमी तो ग़रीब है।

मुझे शिकवा उनसे कोई नही, मुझे है गिला तो है खुद से ही,
नही बस है इसपे किसी का भी, ये तो अपना अपना नसीब है।

जो थे करते वादे बड़े बड़े, वह नज़र बचा के चले गये,
ये ग़रज़ के बन्दो की बज़्म है[1], यहाँ कौन किसका हबीब[2] है।

किया दिल से प्यार उसे मगर, मै उसे यक़ी न दिला सका,
जो न अपनी बात को कह सका, वह इक आदमी भी अजीब है।

है अजीब प्यार की रह गुज़र[3], यहाँ सोना चाँदी है बेअसर[4],
वह जो लुट गया वह अमीर था, जो बचा रहा वह ग़रीब है,

उसे रूह से ही है वास्ता, उसे जिस्म से नही कुछ ग़रज़,
वह मुसाफ़िरे–रहे इश्क़[5] है, मगर राह उसकी अजीब है।

---

1. मतलबी लोगो की महफिल है 2. दोस्त 3. रास्ता. मार्ग 4. व्यर्थ बेकार
5 प्यार के रास्ते पर चलने वाला मुसाफिर

इश्क़ जब कामयाब होता है

इश्क़ जब कामयाब होता है,
और भी लाजवाब[1] होता है।

हुस्न का आसरा न रखना कुछ,
हुस्न बस इक सराब[2] होता है।

राहे उल्फ़त मे तीरगी कैसी[3],
इश्क़ इक आफ़ताब[4] होता है।

झूठ के पैर ही नही होते,
झूठ कब कामयाब होता है।

जुल्म करना तो ध्यान में रखना,
हश्र[5] के दिन हिसाब होता है।

पूछो मज़हब के ठेकेदारो से,
क्या अज़ाबो–सवाब[6] होता है।

आईना क्यो न हो ख़फ़ा[7] उनसे,
जिनके रुख़[8] पर नक़ाब होता है।

---

1 अद्वितीय जिसकी तुलना न की जा सके 2 मृग–तृष्णा 3 अंधेरा कैसा 4 सूरज 5 6 पाप–पुण्य 7

(उस)ने महकाया मिरी ज़ीस्त के वीराने को

जिसने महकाया मिरी ज़ीस्त[1] के वीराने को,
बन के अब फूल चमन गै़र का महकाएगी,
जो सजाती थी शबो–रोज़ मेरे सपनो को,
अब किसी और के ख़्वाबो मे नज़र आएगी।

जिसको कस्तूरी–सा रक्खा था छुपाकर मैने,
जिसकी ख़ुशबू ने था दीवाना बनाया मुझको,
जिसकी आग़ोश[2] मे मदहोश हुआ मेरा वुजूद[3],
जिसकी ख़ामोश निगाहो ने पुकारा मुझको।

अब नज़र आती नही हद्दे–नज़र[4] तक वो लहर,
बीच मझधार मिली थी जो किनारे की तरह,
लिख दिया मेरे मुक़द्दर[5] में अंधेरा उसने,
जो हर एक रात चमकती थी सितारे की तरह।

लाख हो दूर मगर है वह मिरे दिल के क़रीब,
शिकवा[6] होठो पे जो आया तो मुहब्बत कैसी,
वह मेरी थी, वह मेरी है, वह रहेगी मेरी,
जब यक़ीं है तो भला उससे शिकायत कैसी?

बस यही अब तो खुदा से मै दुआ करता हूँ,
उसके आचल मे जहा भर की वह खुशिया भर दे,
पाने वाला उसे इस दर्जा उसे प्यार करे,
कतरा क़तरा ही सही उसको समन्दर कर दे।

उसके दिल से मिरा हर नक़्श[7] मिटा दे यारब[8],
भूल से भी न हो उस सम्त कभी मेरा गुज़र;
मै तभी समझूगा था मुझको कभी पासे–वफ़ा[9],
मै तभी मानूगा है मेरी मुहब्बत में असर।

(ज़ि)न्दगी 2 गोद 3 अस्तित्व 4 जहा तक दृष्टि जाती है (5 ...)
(6 ...) 7 निशान 8 ऐ खुदा 9 वफादारी का ख़्याल

क़त्अ:

उनको पाता हूँ और खोता हूँ,
रोज़ तन्हाइयो मे रोता हूँ,
ज़िंदगी हो गयी बहुत बोझिल,
जिस्म का बोझ अपने ढोता हूँ।

कितने जन्मो का साथ है तुमसे,
मुझको हर मोड़ पर रिझाते हो
मुझसे कोई गुनाह हुआ है ज़रुर,
याद करते हो भूल जाते हो।

जिसकी बर्बादी ने उसको किया होगा आबाद,
किस क़दर उसकी तबाही ने दुआ दी होगी,
ज़िंदगी ने जो जलाई थी कभी ख़ुश होकर,
आज वह शम्अ खुद उसने ही बुझा दी होगी।

क्यूँ तूने मिरे प्यार को बदनाम किया था,
अश्कों से भरा दामन क्यूँ थाम लिया था,
आग़ोश[1] ने मेरे तुझे ख़ुशियाँ ही तो दीं थी,
मैने तो तेरे प्यार का बस जाम पिया था।

हर किसी के अलग फ़साने[2] हैं,
अक़्ल वाले हैं कुछ दिवाने हैं,
कैसे समझे किसी के दिल को कोई,
दोस्त तक कर रहे बहाने हैं।

हमने खुद ही फ़रेब खाए हें,
दिन गुज़ारे हैं काली रातों मे,
दोस्तो की जुबाँ[3] बहुत मीठी,
है भरा ज़हर उनकी बातो मे।

गोद 2 किस्से 3 जुबान बातें

कल उड़ाते थे जो हँसी मेरी
आज झुककर सलाम करते है,
थे जो कल तक मिरे खुले दुश्मन
आज दम दोस्ती का भरते है।

चाहत ने तो चाहा है सौ बार बुलाना,
फुर्क़त[1] ने भी चाहा है सौ बार रुलाना,
मर मर के जिलाता रहा इस जज़्बए दिल को,
चाहत को भी, फुर्क़त को भी, सौ बार भुलाना।

दिल ने तो तुमको बुलाया बार बार,
अक़्ल ने तुमको भुलाया बार बार,
मुझसे दोनो तब से रुख़्सत[2] हो गये,
प्यार ने जब से रुलाया बार बार।

मैं बार बार तिरे पास आ के लौट आया,
बहुत अजब सा ही एक फ़ासिला लगा है मुझे,
खुदा को तू ने ही शामिल किया था क़समो मे,
तिरे ही दिल में मगर ज़ल्ज़ला[3] लगा है मुझे।

जिससे मिलना है तबियत से मिलो,
दुश्मनी छोड़ मुहब्बत से मिलो,
प्यार का दिल में समन्दर है तिरे,
डूबना है तो इस हसरत[4] से मिलो।

गुनाह कितने किए इसका कुछ हिसाब नहीं,
मिलेगी कितनी सज़ा इसका भी जवाब नही,
मुआफ़ करना मिरे सारे ही गुनाहो को,
हूँ आदमी मगर इतना तो मै ख़राब नही।

वियोग जुदाई 2 बिदा 3 भूचाल 4 इच्छा

जि़दगी मे बहुत दिखावा है,
आदमी सिर्फ़ एक भुलावा है,
हर कोई चाहता है सच बोले,
क्या करे हर क़दम छलावा है।

आज वो क्यो खफ़ा खफ़ा–सा है,
उसको लगता है फ़ासिला–सा है,
दिल की धड़कन मे वो समाया है,
कैसे कह दूँ कि बेवफ़ा–सा है।

हर कोई देखता है सूरत को,
कौन समझा किसी की सीरत[1] को,
ये गुनाहो–सवाब[2] कुछ भी नही,
हम तो बस देखते है अज़्मत[3] को

चार तिनके चुने थे गुलशन[4] मे,
आग उसमे लगाई है तुमने,
मुझको तुम पर बहुत भरोसा था,
बेरुखी[5] क्यो दिखाई है तुमने?

कितना पीता मै सिर्फ़ आँखों से,
तुमको आया नहीं पिलाना भी,
कौन कहता है मैं नहीं आता,
तुमको आया नही बुलाना भी।

वह जितना मुझसे दूर है उतना क़रीब है,
बीमारे दिल का एक वही तो तबीब[6] है
वह शख़्स जिसने दर्द की सौग़ात[7] दी मुझे
दुनिया में बस वही तो मिरा एक हबीब[8] है।

---

1 स्वभाव 2 पाप–पुण्य 3 बड़प्पन 4. बाग 5 उपेक्षा. 6. इलाज करने वाला,
7 भेंट उपहार 8 दोस्त

जाने कैसे हमारे वो अहबाब[1] है,
कह के छोटा हमे जो बडे हो गये,
दोस्तो ने तो हम को गिराया बहुत,
वह तो हम थे जो उठ कर खड़े हो गये।

जिंदगी में जितना रोते जाएगे,
दोस्तो को उतना खोते जाएगे,
प्यार से बोलो, मिलो, बाते करो,
सब तुम्हारे साथ होते जाएगे।

खुद से कितना दूर अब हम हो गये,
दोस्तो की भीड़ में बस खो गये,
हर क़दम पर कारवाँ बढ़ता गया,
आ के मंज़िल पर अकेले हो गये।

खुशियो की थी तलाश मगर ग़म ही मिला है,
ग़ैरों से नही, अपनो से ही इसका गिला[2] है,
अच्छा ही हुआ टूट गया रिश्ता वफ़ा का[3],
उल्फ़त[4] में मुझे और नहीं कुछ भी मिला है।

अब जुदा होने लगीं परछाइयाँ,
कितनी बढ़ती जा रहीं तन्हाइयाँ,
प्यार की राहों मे कुछ तो मिल गया,
फ़ासले तय कर गयी रुस्वाइयॉं[5]।

स्वर ही नही रूप भी संगीतमयी है,
सानिध्य तुम्हारा तो जीवंतमयी है।
देखा जब से तुम्हें विश्वास हुआ है मुझको,
माया उस ब्रह्म की आनंदमयी है।

---

1 बहुवचन मित्रगण 2 शिकायत 3 प्यार का सम्बन्ध 4 प्यार

पूछी उसने मुझसे परिभाषा जीवन की,
था मेरा उत्तर है यह है एक तपस्या,
कोई भी अब तक इसे नही समझा है,
जीवन रहता आजीवन एक समस्या।

होती हर पल यहाँ परीक्षा है,
वक्त करता नही प्रतीक्षा है,
अपनी मंज़िल पे गर पहुँचना है,
करनी अपनी तुम्हे समीक्षा है।

द्वेष ईर्ष्या में पड़े, रोगी है वह
क्रोध, भय मे गल रहे भोगी है वह,
और ऊपर उठ गये हैं इनसे जो,
है मनुज[1] पर अस्ल मे योगी है वह।

तन तो कहता है कि कुछ मत छोड़िये,
बुद्धि कहती है कि मन को मोड़िये,
सार जीवन का निहित[2] इस तथ्य मे,
आत्मा को ब्रह्म से बस जोड़िये।

1 मनुष्य 2 छिपा हुआ

शेर

रवॉ लहू मे हो अब रूह में समा जाओ,
जुदा न हों कभी हर पल ही मै विसाल[1] करुँ।

अपने हालात का इल्ज़ाम न दूँगा मै उन्हें,
ये अलग बात कि हालात के बाइस[2] वो है।

मेरी बर्बादी की कुछ भी न मिले उनको सज़ा,
उनको तकलीफ़ ज़रा सी भी हो मज़ूर नही।

गर बुलाओगे तो पलको से चला आऊँगा मैं,
वरना ख़ुद्दार[3] हूँ खुद तो न मै आऊँगा कभी।

अजीब क़िस्म की उनकी मेरी मुहब्बत है,
हूँ बावफ़ा मगर वो बेवफ़ा ही कहते है।

हमारी और उनकी गर मुहब्बत हो तो ऐसी हो,
कहूँ उनको मै मजनूँ और वो लैला कहें मुझको।

मुझसे अगर वो दूर है तो दूर ही रहे,
चेहरे पे उनके मेरे ही मेरे निशान है।

मेरे होठो पे रुका आ के बस उनका ही नाम,
वो ही आग़ाज़े[4] वफ़ा वो ही है अंजामे[5] वफ़ा ।

हो गए हैं दूर वो जब से ज़माने के लिये,
आ गया हूँ पास मै उनको मनाने के लिये।

रो लेता औरो के ऑसू समेट कर,
मुझको तो अपने ऑसू बहाना नहीं आता।

1 मिलन 2 कारण 3 खुद्दार 4 आरम्भ 5 अंत

तुम्हारी आँखो के आँसू हैं जिसकी आँखों मे,
वही तुम्हारी मुहब्बत की जुस्तजू में है।

भीड़ मे रहकर भी जो तन्हा[2] रहे,
ज़ख़्म होगे किस क़दर उसके हरे।

ख़ुदा ने मुझको तो अच्छा भला बनाया था,
हुआ ये कैसे कि शैतान बन गया हूँ मैं।

फ़न्कार[3] बुरे हो तो कोई फ़र्क नही है,
इन्सान बुरे हो तो बहुत फ़र्क पड़ेगा।

यूँ तो हर चीज़ मयस्सर[4] है जहाँ[5] में लेकिन,
इक वफ़ा है जो न ढूँढे से कहीं मिलती है।

ज़िदगी ने दोस्त ही उनको चुना,
जो चुभे है ख़ार[6] बन दिल मे मिरे।

और छोड़ोगे किसको दुनिया मे,
तुम ख़ुदा तक को धोखा देते हो।

मुआफ़ करना मिरे गुनाहो को,
अब गुनाह उम्र भर नहीं होंगे।

उनकी याद आई है, साँसों ज़रा धीरे चलो,
दिल धड़कने से तसव्वुर में खलल[7] पड़ता है।

तू मिरी और मै तिरी, साँसो मे शमिल हो गये,
फ़ासला जो कुछ बचा था, वह भी पूरा हो गये गया।

पूछते है मुझसे आकर ख़्वाब में,
क्यो बुलाया है ज़रा बतलाइए।

यक़ीन है कि कभी भी न उनको भूलूँगा,
दिलो–दिमाग़ पे मेरे वो ऐसे छाए हैं।

---

1 तलाश 2 अकेला 3 कलाकार 4 प्राप्त 5 ससार 6 काँटे 7 ध्र में बाधा पड़ती है

मुत्मइन हो के[1] मुहब्बत से मुझे देख ए दोस्त,
मै बदल डालूँगा हाथों की लकीरे तेरी।

तुम्हे फ़ुर्सत हो गैरो से तो आना मेरी बाहो मे,
तुम्हारी दास्ताँ[2] होगी मिरी खा़मोश आहों मे।

अपने हाथो की लकीरो को पढ़ा है जब भी,
उनमे बस तेरी ही तस्वीर नज़र आई है।

तुम ज़रा और क़रीब आके मुझे देखो तो,
तुमको शायद कही अहसासे-वफ़ा हो जाए।

आईना[3] दिखला के मैने यह कहा,
अक्स[4] किसका है ज़रा पहचानिए।

जिस तरफ भी हम गये तुम मिल गये,
हर तरफ़ थी याद की परछाइयाँ।

वक्त बीता जा रहा है किस तरह,
क्या कभी पूछा है खुद से आपने?

मै तो सहरा[5] में तड़प जाऊँगा पानी के लिये,
चन्द बूँदे मिरी क़िस्मत मे मयस्सर कर दे।

आज मुझको फिर से उनके वास्ते रोना पड़ा,
उनको क्या मालूम मुझको क्या से क्या होना पड़ा।

दूर रहकर जो ख़्यालो मे बुला लेते हो,
कितने मासूम हो शोलो को हवा देते हो।

जो कह रहे थे मुझसे ज़रा अश्क[6] रोकिए,
हालात हुए ऐसे कि वो खुद ही रो दिए ।

अहदे-वफ़ा[7] किया था कभी तुमने किसी से
यह मुझसे पूछते हो क्या तुम तो वो नही थे?

होकर 2 कहानी 3 शीशा दर्पण 4 परछाई प्रतिबिम्ब
प्यार का वादा

देश वासियों में देश भक्ति चाहिए

देश वासियों मे देशभक्ति चाहिए,
देश पर जो मिट सके वह व्यक्ति चाहिए।

सविधान राष्ट्र–ध्वज जो जलाते है,
दुश्मनों को देश में जो बुलाते हैं,
ऐसे देश द्रोहियों से मुक्ति चाहिए।

राम–राज्य ला सके फिर से देश में,
स्वाभिमान को जगाए अपने देश में,
शासको के पास ऐसी युक्ति चाहिए।

है नही ये भूमि ये तो माँ हमारी है
ये नहीं शरीर, ये तो जाँ हमारी है,
मातृ–भूमि के लिये आसक्ति चाहिए।

मोड़ देगे हम समय की धार ही स्वय,
और जलाएंगे शमा भी प्यार की स्वयं,
अपनी आत्मा में इतनी शक्ति चाहिए।

नफ़रतो की आग को बुझा के रहेगे,
आपसी ये दूरियां मिटा के रहेगे,
हम सभी में ऐसी आत्म–शक्ति चाहिए।

देश के लिये स्वय को जो मिटा सके
सोये हुए नागरिकों को जो जगा सके,
हम को हर डगर पे ऐसे व्यक्ति चाहिए।

कर्म करो फल की कभी चाह न करो,
भला–बुरा कोई कहे, आह न भरो,
अपने मन मे ऐसी ही विरक्ति चाहिए

तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं ?

तुम क्यो न मुझे पहचान सकी?
यह माया है सब ही जगती,
नश्वर काया सबको ठगती,
है प्यार अमर, है प्यार अमर,
गूजा करता बस ये ही स्वर,
फिर क्यूँ अपना ये अमर प्यार ,
दे मुझको कभी न दान सकी,

तुम क्यो न मुझे पहचान सकी?
ये आयु जो बढ़ती जाती है,
सच कह दू घटती जाती है,
जो कुछ भी बाह्य दिखावा है,
सचमुच वो मात्र छलावा है,
छलना मय प्यार न प्रिय मुझको,
क्यो इसे न अब तक जान सकी?

तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं?
तुम प्रायः पूछा करती हो,
"क्यो करता हूँ मै तुम्हें प्यार?"
पर क्या तुम बतला सकती हो,
"क्यों करती हो तुम मुझे प्यार?"
प्रश्नो मे प्यार नही बँधता,
तुम इसे न शायद मान सकी,

तुम क्यों न मुझे पहचान सकी?

काया तो धुँधली रेखा है
जीवन अनबाँचा लेखा है
अब जन्म हुआ, अब मरण हुआ
यह रूप सभी का देखा है,
''भावो की आयु नही होती'',
तुम क्यों न कभी अनुमान सकी?

तुम क्यो न मुझे पहचान सकी?

हम एक जन्म से नही जुड़े,
ये जन्म जन्म के नाते है,
मिलना और बिछुड़ना दोनो,
भाग्य भाग्य की बाते है,
तुमको तो मैं पहचान गया,
तुम क्यो न मुझे पहचान सकी?

तुम क्यों न मुझे पहचान सकी?

कौन करेगा इतना प्यार?

कौन करेगा इतना प्यार?
गगा–यमुना के सगम सी,
तन–वीणा पर मृदु सरगम सी,
करती तुम सांसों मे नर्तन,
कैसे रुक पाए अभिसार?
कौन करेगा इतना प्यार?
समझ न पाई अब तक तुमको,
एक पहेली से तुम मुझको,
क्यो करते हो प्यार मुझे तुम?
प्रश्न कर रही बारम्बार।
कौन करेगा इतना प्यार?
क्यों करता है प्यार तुम्हें मन,
समझ न पाया सारे जीवन,
कैसे दू मैं इसका उत्तर?
क्यों तुम पर इतना अधिकार?
कौन करेगा इतना प्यार?
तन नश्वर,मन भी है नश्वर,
ईश्वर केवल एक अनश्वर,
फिर तन मन में अन्तर ही क्या?
समझ न पाता क्यो ससार?
कौन करेगा इतना प्यार?
जब मन तेरा ही अब मेरा,
कैसे अलग रहे तन तेरा?
मन यदि हार गया तो समझो,
तन की निश्चित होगी हार,
कौन करेगा इतना प्यार?

मीत नही है कोई किसी का

मीत नही है कोई किसी का, मन को यह समझाना है,
मिलना जुलना दुनिया मे बस, होता एक बहाना है।

जो है जितना पास हमारे, मन से उतना दूर रहा
जो है तन से दूर हमारे, मिलने को मजबूर रहा
रीति अजब है इस दुनिया की, हमको यह बतलाना है।

मृगतृष्णा–सी जीवन सरिता, रुकी हुई पर लगती बहती
बिकती माटी मोल है काया, सोने जैसी जो है लगती,
सत्य यही है इस दुनिया का, हमको यह समझाना है।

जो कुछ जिसने किया यहाँ पर, उसका लेखा जोखा है,
धर्म अभी है जीवित जग में, और सभी कुछ धोखा है,
सत्य जयी हो, राम राज्य हो, ऐसा देश बनाना है।

लड़वाया इन्सानो को है, मदिर मस्जिद वालो ने,
आग लगाई है हर दिल मे, उनकी गंदी चालों ने,
बन पाए हम सच्चे मानव, ऐसी ज्योति जगाना है।

एक परछाईं का पीछा कर रहे हम

एक परछाई का पीछा कर रहे हम,
और मन ही मन खुशी से भर रहे हम।

उम्र भर चालाकियॉ करते फिरे हम,
अपनो की बदनामियाँ बुनते रहे हम,
दोस्तो से राजनीति कर रहे हम।

सोचिए तो ज़िंदगी मे क्या मिला है,
पल न कोई भी हमे अपना मिला है,
सिर्फ़ तन्हाई में जीवन भर रहे हम।

हम समझते ही रहे जिसको सगा ही,
दे रहा है आज वो हमको दग़ा ही,
फिर भी जी जी कर उसी पर मर रहे हम।

दूर है इसान से इंसानियत भी,
हॅस रही है हर तरफ़ हैवानियत भी,
और सच के गीत गाने पर रहे हम।

सैर मंगल चाँद की करते रहे हम,
दम उड़ानों का बहुत भरते रहे हम,
किन्तु धरती पर नही मिल कर रहे हम।

आज बढ़ती जा रही हैं दूरियॉ ही,
कह रहे फिर भी उन्हे नज़दीकियॉ ही,
छल अब अपने आप से ही कर रहे हम।

मैं तुम्हारा प्यार हूँ, शृंगार नहीं हूँ

मै तुम्हारा प्यार हूँ, शृगार नही हूँ,
मै तो हूँ कर्त्तव्य बस, अधिकार नही हूँ।

प्राण बनकर तुम समाई बावरे मन मे,
है कोई अभिशाप जो हो दूर जीवन मे,
हूँ पुजारी मै तेरा, अभिसार नही हूँ।

कैसे भूलोगे मुझे मै मित्र तुम्हारा,
मैं नहीं कुछ भी हूँ केवल चित्र तुम्हारा,
हूँ तुम्हारा मैं मगर परिवार नही हूँ।

है नही सम्भव कि पूरी हो अपेक्षाए,
अपनो से मिलती हैं पग पग पर उपेक्षाए,
स्वप्न हूँ सुन्दर तेरा, संसार नहीं हूँ।

एक जीवन तक नहीं, सम्बंध सीमित है,
मरण की बिछुड़न क्षणिक, अनुबंध जीवित है,
हूँ तेरी पतवार मैं, मझधार नहीं हूँ।

किसको पाना है, किसको खोना है

किसको पाना है, किसको खोना है,
जो भी होना है, वह तो होना है।

पल में हँसना है, पल मे रोना है,
आदमी सिर्फ़ एक खिलौना है।

राह लम्बी सफ़र बहुत मुश्किल,
चलते रहने से ही मिले मन्ज़िल,
एक पल भी हमे न खोना है।

कैसे समझे कोई ज़माने को
उम्र एक कम है आज़माने को,
झूठ से छाया कोना कोना है।

ख़ाली आए थे, ख़ाली जाएगे,
साथ कुछ भी तो ले न पाएगे,
किसलिये फिर ये रोना-धोना है।

भर गया अब तो दिल ज़माने से,
कुछ न हासिल है दिल लगाने से,
है जो मिट्टी वो लगता सोना है।

जिंदादिली से खुद ही चमकती है जिंद

जिंदादिली से खुद ही चमकती है जिंदगी,
हँसने–हँसाने से ही महकती है जिंदगी।

खुशियो को बॉट कर ही ज़माने में तुम रहो,
रोतों के ऑसू पोछ के दुनिया मे तुम जिओ,
बुझते दिलो में रोशनी करती है जिंदगी।

ये जिदगी तो सिर्फ़ खुदा की है अमानत[1],
जिंदादिली से इसको गुज़ारो ये है नेमत[2],
ग़म मे भी मुस्कुराती ही रहती है जिंदगी।

है प्यार से बढ़कर नहीं कोई भी तो दौलत,
दिल को है दिल से जोड़ती बस सिर्फ़ मुहब्बत,
तुम खुद भी जिओ, जीने दो कहती है जिंदगी।

उसकी निगाहें नाज़[3] ने दीवाना कर दिया,
पीए बगैर दिल को भी मयखाना कर दिया
आग़ोश[4] मे ही उसके सॅवरती है जिंदगी।

मिलने को मिले दुनिया मगर यार है सब कुछ,
कहने को कहो कुछ भी मगर प्यार है सब कुछ
सजदे[5] मे सर झुकाती ही रहती है जिंदगी।

नज़रे झुका के वो भी हमे देख रहे है,
शरमाए वह कि हम भी उन्हें देख रहे हैं,
दरिया–ए–इश्क़ में ही निखरती है जिंदगी।

---

1 धरोहर 2 ईश्वर का दिया हुआ धन आदि 3 हाव भाव की
5 ज़मीन पर सर रख कर ईश्वर को प्रणाम करना

जीवन है सुख–दुख का मेला

जीवन है सुख–दुख का मेला।
आओ तो कुछ देर हँसे हम,
मन की भी कुछ बात कहे हम,
गुज़र रही है सुबह–शाम
सारे दिन बस काम काम
बीत गयी है सारी बेला,
जीवन है सुख–दुख का मेला।

मै हूँ पूरब, तुम हो पश्चिम,
निश्चय ही बस यह है अन्तिम
दोनो ही हैं असन्तुष्ट
अपने से हैं स्वय रुष्ट,
है यह अजब समय का रेला,
जीवन है सुख–दुख का मेला।

मतलब का है बोलबाला,
बाहर उजला अन्दर काला,
ख़ुद ही अपने इर्द–गिर्द वह,
बुनता है मकड़ी का जाला,
चारो ओर है ठेलम ठेला,
जीवन है सुख–दुख का मेला।

चादर से हो बड़े पाँव
नहीं ठहरना ऐसे ठाँव
कभी धूप तो कभी छाँव,
जीवन है बस एक दाँव
हर तरफ़ ही काँव काँव,
दो दिन के छोटे से सफ़र में,
क्यों है झंझट?
क्यों है झमेला?
जीवन है सुख–दुख का मेला

जिंदगी–एक कैलेंडर

इसान की जिंदगी क्या है?
एक कैलेडर
जो हर साल वक्त की दीवार पर टाँग दिया जाता है,
इसान हर साल नयी मुबारकबादियो के साथ
कैलेडर–सा टंग जाता है।
वक्त चलता रहता है
आगे बढ़ता है
और आदमी वही का वही है
वह नही बदला
बदला है सिर्फ़ बाहिरी रूप
कॉस्मेटिक सभ्यता ने उसे और अधिक दिखावटी बनाया है,
जगलीपन को और ज़्यादा जंगली बनाया है।
कहते हैं विज्ञान की तरक्की और ईजादो ने
फ़ासलों को कम किया है,
मगर इसान को इंसान से बहुत दूर किया है
बाहरी नजदीकियों ने अन्दरूनी दूरियाँ पैदा की हैं
नफ़रत और लड़ाई पैदा की है।
इस एटमी सभ्यता में
हम हवा में उड़ते हैं
अन्तरिक्ष में तैरते हैं
चाँद मंगल पर पाँव धरते हैं
समुद्र की गहराइयाँ नापते हैं
मगर बेसहारा इंसान पर गोली चलाते हैं

मासूम बच्चो और अस्पतालो पर बम बरसाते है
और दम भरते हैं—
हम अपने देश को आगे बढ़ा रहे हैं
कहते हैं "राष्ट्र की प्रगति के लिये
यह सब बहुत आवश्यक है।"
अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे निर्णय होता है–
"कोई देश किसी देश पर आक्रमण नहीं करेगा"
निर्णय की स्याही सूख नही पाती–
हमले शुरू हो जाते हैं–
और हम जैसे पिछले साल थे
उससे और ज़्यादा खूँख्वार बन जाते हैं
यही है आज की ज़िदगी का कैलेंडर
जो हर साल खून से रग जाता है
और नया साल आने पर नया कैलेंडर
दीवार पर टाग दिया जाता है
ताकि
साल के आखीर तक
फिर खून से रंग सके
और आने वाले साल में
फिर एक साफ़-सुथरा कैलेडर
टँग सके।

जीवन और अस्तित्व

जीवन और अस्तित्व
दोनो एक नहीं।
मै जिंदा तो हूँ
पर जी नही रहा।
अस्तित्व नाम है–
साँस के आने जाने का
खाने पीने का
सोने जागने का
और आखिर मे
इन सब के रुक जाने का।
अस्तित्व मरता है, मिटता है।
और जीवन?
साँस के आने जाने का
खाने पीने का
सोने जागने का
नाम भर नहीं।
वह जीता है
राम और रहीम में
कृष्णऔर करीम में
ईसा और मुहम्मद मे
नानक और कबीर में
बुद्ध और गाँधी में
जो अस्तित्व के बिना भी
आज तक जीवित हैं
इतिहास के पृष्ठों में
मंदिरो, मस्जिदों, गिरजाघरों और गु
माटी के कण कण मे
वे मेरे तुम्हारे पास खड़े

अपनी खुशबू फैला रहे हैं
हमे बुला रहे है
हमसे कह रहे है
नफ़रत से नफ़रत
और प्यार से प्यार उगता है
वैसे ही जैसे बबूल से बबूल
और आम से आम उगता है–
नफ़रत, प्यार नही देती
प्यार ही प्यार देता है।''
जो दोगे, वही पाओगे
पाने की पहिली शर्त है
देना, सिर्फ देना, बस देना
जिन्होने दिया वे ही आज जीवित है
तुम्हारे मेरे चारो तरफ खडे कह रहे है
अस्तित्व तो बस मिट्टी है
मिट्टी का है
वह मिटने के लिये ही बना है
ज़रूर ही मिटेगा।
और जीवन?
वह कभी नहीं मिटता
वह कभी नहीं मरता
वह जितनी देर भी रहे
जी लो
प्यार का ख़ज़ाना लुटा दो
प्यार बो दो
प्यार की फ़सल बढ़ने दो
आने वाला कल प्यार की फ़सल काटेगा
और उसे फिर फिर बोएगा
प्यार ही जीवन है
जो अस्तित्व के बिना भी
जीवित रहता है

तुम कौन हो देवी?

तुम कौन हो देवी?
कौन हो तुम मेरी?
आराध्या, पूज्या, वदनीया, चिरपरिचिता
श्वॉस श्वाँस स्वामिनी
रक्त बिन्दु घुली घुली
रोम रोम अधिकारिणी
कौन हो तुम स्वर्ग अप्सरे?
कौन हो तुम मेरी?
वियोग अभिशप्ता,
जन्म जन्मो सहचरी,
काव्य–संगीत प्रेरणा,
चिर प्रतीक्षिता,
प्राण–मन स्वामिनी
कौन हो तुम सुन्दरी?
कौन हो तुम मेरी?
कलामयी,
सुसंस्कृत, सुसभ्य, सुसस्कारित,
शालीन ममतामयी
जीवत प्रेम–प्रतिमा
अभिनंदनीया,
देवदूता
मेरी
बस मेरी
केवल मेरी हो तुम
हे देवी हे सुन्दरी हे स्वर्ग अप्सरे

मेरा दुख?

मै बहुत सुखी हूँ
मेरे पास आलीशान कोठी है
बहुत बड़ी कॉर है
लाखों का बैंक बैलेंस है
फ़ैक्टरियॉ हैं
सुन्दर पत्नी है, बच्चे है
स्वस्थ हूँ, बहुत सुखी हूँ मैं।
मगर, इस सुख को,
एक दुख दबाए हुए है
सुन सकेगे आप?
सह सकेगे आप?
आप ही का तो दिया हुआ है यह दुख,
आप नहीं जानते?
क्यो जानेगे आप ?
आप सुखी है न ?
बस यही तो मुझे दुख है,
आप दुखी हो जाइए–
मुझे सुख मिल जाएगा
और जब तक आप सुखी है
मेरे जीवन में दुख ही दुख रहेगा ।
क्या आप मेरे सुख के लिए
इतना कर सकते हैं?
देखिए, मैं आपके लिये दुखी हूँ
आप मेरे लिये दुखी नही होंगे?
त्याग की भी एक महानता है
मुझे सुखी करने के लिये
आपका दुखी होना बहुत जरूरी है,
मुझे विश्वास है
मुझे सुखी करने के लिये
आप यह त्याग जरूर करेगे।

तुम मुझसे झूठ बोल रहे

तुम मुझसे झूठ बोल रहे
तुम उससे झूठ बोल रहे
तुम सबसे झूठ बोल रहे
सबको धोखा दे रहे
एक मुखौटा लगाए घूम रहे
अपना असली चेहरा छिपा रहे
पाखण्ड की रामनामी चदरिया ओढ़े "राम राम" जप रहे
और बगल मे ईंट ढो रहे।
क्या कभी तुमने अपने अन्तर मे झाँका ?
क्या कभी तुमने अपने स्वय से बात की?
क्या कभी अपने को अपने से अलग करके देखा?
शायद कभी नही
क्यों?
क्योकि तुम मात्र एक शरीर भर रह गये हो,
झूठ, छल और पाखण्ड बन गये हो।
लेकिन मेरे दोस्त!
यह बहुत दिन नही चलेगा
इस चादर और मुखौटे को उतार फेंको
सोचो, जो तुम दूसरो के साथ कर रहे
अगर वही तुम्हारे साथ हो, तो तुम्हारा क्या होगा?
क्या तुम्हारा अस्तित्व भी रह सकेगा?
जो बोओगे, वही काटोगे,
सच और ईमानदारी के बीज डालो
झूठ, फरेब और बेईमानी के खोल से अपने को बाहर नि
तभी तुम्हे मिलेगा वास्तविक सुख
और मिलेगी एक अलौकिक शाँति

यह पल

कहते हैं–ज़िंदगी बहुत छोटी है,
यह भी कहते है – ज़िदगी बहुत बड़ी है
कौन जाने कितनी है?
मगर, इतना सच है
इस वक्त
वक्त भी नही
इस पल मै जीवित हूँ
और अगले पल?
कौन जाने क्या हो?
आने वाले पल को
मुझसे शिकायत क्यो?
बीते पल ने भी तो
मुझे छोड़ दिया
ज़िदगी का यह पल
ही सच है
बाक़ी सब, सब झूठ है,
न पिछला पल था,
न अगला पल होगा।

तन्हा इन्सान

कितना तन्हा है इन्सान?
चारो तरफ़ भीड़ ही भीड़,
मेला ही मेला
दोस्त ही दोस्त
और है
क्लब, संस्थाएं, खेल–तमाशे
और उनमे अपने को गुम करने की कोशिश
मगर, इस सबके बावजूद
हम कितने तन्हा है?
पता नहीं किसकी तलाश है?
क्या बेचैनी है?
क्या ख़लिश है?
जो हर लम्हा पागल–सी बनाए रखती है
और महफ़िल मे भी तन्हा रखती है,
कभी भी मुझे खुद से
मिलने नहीं देती
और चारो तरफ़ से
हर वक्त घेरे रहती है
एक अजीब अजीब सी उदासी
जिसकी वजह मुझे खुद भी मालूम नहीं
जिसे आज तक मै समझ नहीं पाया,
मगर जिसका एहसास
मुझे हर लम्हा सालता रहता है
और मैं कोशिश करता हूँ
मतलब निकालने का
जो आज तक निकल नहीं पाया

गीता रचयिता ने कहा

गीता रचियता ने कहा
ममता और मोह
राग और अनुराग
कष्ट का मूल कारण हैं–
        सुख मे सुख की
        दु:ख में दु:ख की
        अनुभूति मत करो
जल मे कमल के समान
निर्लिप्त भाव से रहो
किन्तु,
मेरे लिये यह सम्भव नही–
मै मर्यादा पुरुषोत्तम राम नही
योगेश्वर कृष्ण भी नही
मै ममता–मोह, राग–अनुराग
द्वारा निर्मित मनुष्य हूँ
सुख मे अवश्य हंसूँगा
दुख मे अवश्य रोऊँगा
इसीलिये देवता तक
मनुष्य देह पाने को तरसते है।

क्षणिकाएं

अँधेरा मुझे अच्छा लगता है
क्योंकि अँधेरे में मुझे,
अन्दर का उजाला दिखाई पड़ता है।

. .

झूठ सम्मानित है
सच दंडित
झूठ दंडित हो
सच सम्मानित
वह दिन जरूर आएगा।

. ..

मैंने उसे धोखा दिया
उसने मुझे
मैं उससे झूठ बोला
वह मुझसे
काश, हम दोनो एक दूसरे को धोखा न देते
झूठ न बोलते,
तो कितने सुखी होते।

.. ..

मै हँसता हूँ—तुम्हे रुलाकर
तुम हँसते हो—मुझे रुलाकर
कितना अच्छा हो यदि
हम दोनों
एक साथ हँसे
एक साथ रोएं।

. . ..

मैने उसके झूठ को भी सच माना
और तुम्हारे सच को भी झूठ
बस यही अन्तर है उसमें और तुम में

तुमने बहू को पखे से लटकाया
फिर भी स्कूटर न मिला
अब तुम फाँसी पर लटको
ऊपर स्कूटर तुम्हारा इतज़ार कर रहा है।

मैने गलती की
क्षमा माँग ली
एक तुम हो
गलती भी करते हो
और सीने पर भी चढ़ते हो।

मै बोलता बहुत हूँ,
सुनता कम
सोचता तो बिल्कुल भी नहीं।
काश,
मै बोलूँ कम
सुनूँ ज़्यादा
सोचूँ और भी ज़्यादा।

यहाँ पानी बहुत है
यहाँ दूध भी बहुत है
मगर इनको मिलाओ मत
तभी दुनिया ठीक से चल पाएगी।

अच्छाई ने बुराई से पूछा–
"तुम कैसे जन्मी?"
बुराई हँसी और बोली–
"तुम ही तो मेरी माँ हो
जब तुम थक जाती हो
तभी मै चुपके से आती हूँ
तुम्हें रुलाती हूँ

स्वय हँसती हूँ
और तुम्हीं मे समा जाती हूँ।''

... ...

मै रोज़ जीता हूँ
रोज़ मरता हूँ
फिर भी ज़िंदा हूँ
इसी का नाम तो ज़िंदगी है।

. .. .

'सच' को याद रखने की जरूरत नहीं
'झूठ' को याद रखना पड़ता है
ताकि दुबारा वही कह सकें
जो पहिले कह चुके थे।

. . . .

मेरे पास धन है,
फिर भी मैं दुखी हूँ,
तुम्हारे पास धन नहीं,
फिर भी तुम सुखी हो,
सुख धन में नहीं,
मन मे है।

.. . .

मैं बहुत व्यस्त हूँ
इसीलिये अस्त–व्यस्त हूँ

....

जीवन का अर्थ
सिर्फ़ स्वयं जीना नहीं
औरो को भी
जीने देना है ।



कवि की लेखनी से लिखी गयी रचनाए अलग–अलग स्वभाव और स्तर को जीने वाले रिश्तो की तरह होती है। कुछ रिश्ते थोडी दूर चलकर छूट जाते है और कुछ जीवन भर हमारा साथ निभाते है और पुराने होकर भी जीवन मे नया रस घोलते है। श्री राम प्रकाश गोयल का मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'टूटते सत्य' जहॉ त्रिकोण प्रेम को लेकर लिखा गया है वही उनके ग़ज़ल सग्रह 'दर्द की छॉव में' और 'रिसते घाव' मे प्रेम, विरह और दर्द की अनुभूतियो का चित्रण मिलता है। उनके द्वारा सम्पादित पुस्तक 'सच्चे प्रेम पत्र' प्रेम और वियोग के अनुभवो से जुडी हुई है।

'एक समन्दर प्यासा–सा' मे श्री गोयल जैसे है वैसे ही प्रस्तुत हुए है। उनकी रचनाओ मे बुनावट है, बनावट नही। वे शोर के नही, शऊर के शायर और कवि है। ग़ज़लो मे वे एक दर्द आशना दिल रखने वाले शायर के रूप मे नज़र आते है। वे प्रेम और दर्द के भोगे हुए क्षणो के निश्छल रचनाकार है और एकता और प्रेम के लिये जितने व्यग्र है उतने ही साम्प्रदायिक और अलगाववादी ताकतो की वजह से फैली नफरतो से दुखी भी। वे जातीय और साम्प्रदायिक उन्माद के लिये नीति विहीन राजनीति को दोषी मानते है और बुरे दौर को अच्छे दौर मे बदलता हुआ देखना चाहते है। उनका दार्शनिक सोच जीवन की गहरी सच्चाइयो से जुडा है। उनके पास अनुभवो का विपुल भडार है जो उम्र की कडी धूप मे तपा है।

'एक समन्दर प्यासा–सा' की गजले जिन्दगी के मीठे और तल्ख एहसासो की सरलतम अभिव्यक्ति है।

डॉ उर्मिलेश
रीडर एव शोध निदेशक
हिन्दी विभाग
नेहरू मैमोरियल शिवनारायण
दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बदायूँ (उ प्र)